मुद्राराक्षस

जन्म : २१ जून १६३१, बेहटा गाँव, लखनऊ।

शिक्षा : एम० ए०, लखनऊ।

- ☐ ज्ञानोदय, अणुव्रत, वीरो (अंग्रेजी साप्ताहिक) साहित्य बुलेटिन तथा बेहतर का संपादन।
- ☐ आकाशवाणी में संपादक (नाटक) के पद से १६७६ में इस्तीफ़ा।
- ☐ सोसाइटी आफ़ सेल्यूलायड आर्ट्स लखनऊ, के अध्यक्ष तथा संस्कृति रंगमंडली के निदेशक। नाट्यकला में राष्ट्रीय-फ़ेलो।
- ☐ अपने पिता, उत्तर प्रदेश की लुप्तप्राय प्राचीन लोकनाट्य परंपरा, स्वाँग के एकमात्र जीवित वयोवृद्ध गायक, अभिनेता और निर्देशक श्री शिवचरणलाल से संगीत निर्भर रंगमंच की प्रेरणा।
- ☐ अनेक नाटकों के निर्देशक और रंग-शिविरों के संचालक के रूप में ख्याति-प्राप्त।

रचनाएँ :

मरजीवा, योर्सफ़ेथफुल्ली, तेन्दुआ, तिलचट्टा, मालविकाग्निमित्र और हम, गुफाएँ, सन्तोला, सीढ़ियाँ, आला-अफ़सर आदि अनेक नाटकों के अतिरिक्त उपन्यास कहानियाँ, कविताएँ तथा समीक्षाओं आदि में प्रसिद्धि।

आला अफ़सर

(नौटंकी)

मुद्राराक्षस

अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

© मुद्राराक्षस

प्रकाशक : अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
२/३६, अंसारी रोड, नई दिल्ली-११०००२

दूसरी आवृत्ति 1983

मूल्य : २०.००

मुद्रक : शान प्रिन्टर्स
रोहतास नगर, शाहदरा-दिल्ली-११००३२

श्री रघुवीर सहाय को

उद्दाम रंग-प्रक्रिया

नौटंकी की अन्दरूनी, छन्द-शिल्पगत बुनावट और उसके संगीत से रिश्ते का अध्ययन अभी नहीं हुआ है। इसीलिए इस विधा को भद्र-मंच की स्वीकृति भी बहुत थोड़ी ही मिली है। यही नहीं, जहाँ अन्य लोक-नाट्यों के तत्वों का नये नाटकों में समावेश हुआ है वहाँ नौटंकी के तत्वों का लगभग नहीं के बराबर ही कहा जायगा।

सर्वेश्वर ने अपने नाटक 'बकरी' में इसके दोहे और बहरतवील का प्रयोग किया है और नाटक के वे हिस्से एक अलग रंग दिखाते हैं। लेकिन इसके अलावा बड़े स्तर पर इस अत्यन्त सशक्त विधा का सार्थक इस्तेमाल बचा हुआ है। इसका कारण इसके अन्तरंग से अपरिचय ही है।

नौटंकी छन्दबद्ध रचना है जिसमें मात्रिक और वर्णिक दोनों ही छन्द इस्तेमाल होते हैं। सवैया, लावनी या क़व्वाली और ठुमरी-दादरा के गीतों के छन्द भी इसमें शामिल होते हैं, लेकिन उनके प्रयोग में एक विशेष सावधानी बरती जाती है जिसका ज़िक्र आगे करूँगा।

दोहा और बहरतवील के अलावा नौटंकी के विशिष्ट छन्द चौबोला और दौड़ हैं।

दोहा हिन्दी साहित्य के अपने सुपरिचित स्वभाव, संस्कार और बुनावट वाला छन्द है जिसमें अक्सर फ़ारसी-बहुल भाषा एक अलग ही रंग पैदा करती है, जैसे :

> इक रहते थे जौहरी, गंगापुर दरम्यान।
> दुख़्तर आला हुस्न की, दी जिसको भगवान।।

—'ह्रिानी का नशा'

दोहे की गति आम तरह के गायन में खासी ठस और धीमी होती है लेकिन नौटंकी ने अपनी अलग गायकी के ज़रिए इसमें गति पैदा की है। विवरण या ब्योरा देने के लिए दोहा और चौबोला दोनों ही बेहतरीन छन्द हैं। लेकिन यह गायकी ही है कि कितने ही इतिवृत्तात्मक प्रसंग को वह उबाऊ नहीं बनने देती। प्रसंग के अनुसार इसके राग में परिवर्तन की एक अत्यन्त लचीली पद्धति इस्तेमाल होती है। दुखद प्रसंग के जिक्र में वही गायक भैरवी के स्वर पकड़ लेता है।

दौड़ एक अत्यन्त रोचक छन्द है। यहाँ दो-दो मात्राएँ पहली दो तेरह मात्रा वाली पंक्तियों में गुप्त होती हैं जो या तो नक्क़ारे के 'धा' से पूरी होती हैं या फिर गायक स्वयं 'हाँ' अथवा 'जी' अपनी ओर से गायन के वक़्त जोड़कर पूरी करता है, जैसे—

विश्वपति अन्तर्यामी।
कमलपद नमो नमामी।

इन्हें गाते वक़्त यों गाया जाता है—

विश्वपति अन्तर्यामी, जी
या
विश्वपति अन्तर्यामी, हाँ।
कमल पद नमो नमामी, हाँ।

लेकिन यही पंक्तियाँ, जब गूढ़ या भेदभरी बातें कहने लगती हैं, उस वक़्त बिना 'जी' या 'हाँ' लगाये हुए गायी जाती हैं। तीसरी पंक्ति भी तेरह मात्राओं की ही होती है जैसे उक्त दौड़ में—

रहम नजरी फरमाओ

इस पंक्ति को गायन में पहली दो पंक्तियों के बाद नक्क़ारे के खुले, द्रुत में तीन ताल और तिहाई के अन्तराल से जोड़ा जाता है और लगभग तहतुल्लफ़्ज़ बोल दिया जाता है और फिर चौथी खासी लम्बी पंक्ति गायी जाती है जो तेरह के बजाय अट्ठाइस मात्राओं की होती है।

बहुत-सी नौटंकियों में दौड़ का बेहद असावधानी और बेतरतीबी या अनावश्यकतापूर्ण प्रयोग मिलता है। लेकिन दौड़ ऐसा छन्द है जिसे नाहक जाया करना ग़लत होता है। कुछ नौटंकियाँ जैसे लैला-मजनूँ या अमरसिंह

राठौर आदि अच्छे कवियों ने लिखी हैं, लेकिन ज्यादातर अनाम कवियों द्वारा थोड़े से पारिश्रमिक पर मंडलियों के लिए लिखी गयी हैं। ऐसी नौटंकियों में छन्दों के साथ बलात्कार आम बात है।

नौटंकी का अत्यन्त रंगीन और आकर्षक छन्द है बहरतवील। दर-असल नौटंकी की असली पहचान आम आदमी के बीच इसी छन्द की गायकी से होती है। मंडलियाँ इसके गायन के साथ नृत्य की कुछ हल्की गतियाँ और नक्क़ारे के खुले बोल इस्तेमाल करती हैं। हाथरस शैली में अन्य छन्दों के साथ-साथ बहरतवील का गायन भी खासा घुमावदार और छोटी-मोटी तानों के साथ होता है, इसलिए गायन ही अवसर प्रधान हो जाता है और अभिनय या नाटकीय गतिशीलता में खासी कमी आ जाती है।

कानपुर शैली में नाटकीयता की रक्षा के लिए गद्य में संवाद तो इस्तेमाल किया ही जाता है गायकी में भी संकोच बरता जाता है। बहरतवील का प्रयोग या तो वाद-विवाद के लिए किया जाता है या ऐसे ब्योरे के लिए जिसके ज़रिए नाटक का गतिशील घटनाक्रम उजागर हो रहा हो।

नौटंकी के इन बहुश्रुत छन्दों के राग तो सीमित हैं, लेकिन गायन शैली में न सिर्फ़ क्षेत्रीय अन्तर है बल्कि हर कलाकार अपनी कुछ न कुछ विशेषता जोड़ देता है। अभी हाल में 'बहादुर-बेटी' की एक व्यावसायिक प्रस्तुति में मैंने एक लड़की को दोहे का पहला तेरह मात्रा वाला चरण मात्र ही चौदह बार अलग-अलग मुरकियों और लपेटों के साथ गाते सुना। इसमें सन्देह नहीं कि बेहतरीन गायन में हाथरस शैली के कलाकारों का महत्त्व बहुत बड़ा है।

हाँ, इनकी धुनों में आमूल परिवर्तन न केवल मुश्किल काम है, बल्कि घातक भी होता है। दर्पण द्वारा 'लैला-मजनूँ' की एक प्रस्तुति में कलाकारों ने स्वच्छन्दता के मोह में बहरतवील, दोहे और चौबोले आदि की बिल्कुल नयी तर्ज़ें जोड़ डालीं। इसका घातक परिणाम प्रस्तुति का अत्यधिक उबाऊ हो जाना था। प्रस्तुति अत्यन्त तनाव-भरे क्षणों में भी मसखरी-सी लगती थी, जबकि 'लैला-मजनूँ' के संवादों को खासा कम कर दिया गया था। इसी नौटंकी की गुलाबबाई की प्रस्तुति में लैला और उसके

अल्दैन के बीच बातचीत पर दर्शक तालियाँ बजाते हैं। धुनें या तर्जें, इस विधा में इसकी गतिशीलता के निर्वाह को ध्यान में रखकर ही बनायी गयी हैं, इसीलिए उनमें ज़्यादा परिवर्तन नहीं दिखायी देता। किसी भी गीति-नाट्य का सबसे बड़ा खतरा होता है उसका उबाऊ हो जाना। क्षोभ या ललकार को गायन में पेश करना उसे हास्यास्पद बनाना होता है। लेकिन नौटंकी में जो तर्जें इस्तेमाल होती हैं वे ऐसे मौक़े पर कथ्य में और अधिक पैनापन पैदा कर देती हैं। इन धुनों को बदलने का अर्थ होता है ऐसे संवादों को दुबारा उबाऊ और प्रभावहीन बना देना।

बहुत कम लोग जानते होंगे कि जहाँ नाटक के लिए फ़िल्में खासी नुकसानदेह साबित हुई हैं, वहाँ नौटंकी की व्यावसायिक मंडलियाँ इस दिशा में बेहद निर्भय हैं। श्रीमती गुलाबबाई ने अज़हद आत्मविश्वास से कहा कि अक्सर मेलों में उनकी नौटंकी पार्टी के करीब लगे घुमन्तू सिनेमा में भीड़ कम ही होती है। सिर्फ़ उत्तर प्रदेश में ही नौटंकी की पचास के करीब व्यावसायिक मंडलियाँ हैं और इनमें से अधिकांश 'टिकट लाइन का खेल' दिखाती हैं और हज़ारों कलाकार इसी पर जीविका चलाते हैं। उनकी पूरी बस्ती ही कानपुर के रेल बाज़ार में देखी जा सकती है। यह स्थिति अभी फ़िल्म की भी नहीं हुई है कि उसके सभी कलाकारों की एक अलग बस्ती ही हो।

नौटंकी पर एक आरोप लगाया जाता है और यह आरोप खासा व्यापक है कि यह विधा विकृत हो गयी है। यह आरोप बिल्कुल बेबुनियाद है। अच्छी नौटंकी आज भी अच्छी नौटंकी है और खराब नौटंकी पहले भी खराब ही रही है। नौटंकियों की पार्टी अक्सर लोग शादी-ब्याह या दूसरे ऐसे किसी सामाजिक महोत्सव पर पैसे देकर बुलाते रहे हैं। अच्छी और बड़ी मंडलियाँ मँहगी होती रही हैं, इसलिए उनका लाभ ज़िमीदार जैसों को ही ज्यादा मिलता रहा है। सस्ते में बुलायी जाने वाली सस्ती पार्टियाँ घटिया प्रस्तुतियाँ ही दे सकती हैं। आम आदमी चूँकि ज़्यादा साधन सम्पन्न नहीं रहा, इसलिए अक्सर उसे घटिया पार्टियाँ बुलाकर ही हवस पूरी करनी पड़ी। नतीजतन् खराब और सस्ती प्रस्तुति देखकर विधा-मात्र के बारे में उसने अपनी राय क़ायम की। परम्परा और नैतिकता मोही निम्न-मध्यवर्ग के लिए नौटंकी इसीलिए नैतिकता से गिरी हुई चीज़ लगने लगी।

एक और पक्ष ध्यान देने लायक़ है : नौटंकी अक्सर काफ़ी रात गये शुरू होती थी और उसकी प्रस्तुति सुबह होने से कुछ पहले तक, आमतौर पर छह घण्टे चलती थी। एक गाँव में हो रही नौटंकी आस पास के कई गाँव वाले देखने पहुँचते थे। सारे दिन मेहनत करने वाले परिवार में नौटंकी के बहाने आँख और कान का सुख पाने के लिए रात-भर जागने और घर से गायब रहने वाले पुरुष; परिवार की दृष्टि में, मुजरे में या शराबखाने में गये हुए जैसे माने जाते हैं। सामान्य मनोरंजन से कटे गाँव के युवक की कल्पना खुद बड़ी तेज़ हो रही है। छुपाकर वह अक्सर नौटंकी में देखे दृश्यों को अतिरिक्त रसमय बनाने के बाद बताता है। मैं अपने उस पड़ोसी युवक को जानता हूँ जिसने मेरे गाँव के पड़ोस के गाँव में हो रही नौटंकी का उन बच्चों के सामने आशातीत अतिरंजना से बखान किया था जो बच्चे नौटंकी देखने से अभिभावकों द्वारा रोक दिये गये थे। नौटंकी थी 'नूरानी मोती' जो खासी त्रासदी थी। पिस्सू (नौटंकी की भाषा में) यानी विदूषक के कुछ फिकरे और एक नर्तकी के गीत—"छुवै ना देबै जोबना पट्टू गारी देबै" को छोड़कर उसमें कुछ भी अश्लील नहीं था, पर वह युवक उन स्थानों पर भी भोंड़े सेक्स प्रदर्शन का जिक्र कर रहा था जहाँ उनके होने की गुंजाइश भी नहीं थी।

वह मेरी देखी पहली नौटंकी थी और चूँकि मैं दूसरे अनेक बच्चों के बीच मंच के बिल्कुल क़रीब बैठा था, इसलिए पिस्सू ने नाचते वक़्त बेतकल्लुफ़ होकर कुछ बच्चों को भी मटकने के लिए तख़्त पर चढ़ा लिया। उनमें एक मैं भी था! मेरे नाचने की खबर और पड़ोसी युवक के अतिरंजित विवरण का नतीजा यह हुआ कि दूसरे दिन मेरे पिता ने मेरी जमकर ठुकाई कर दी। उस पिटाई ने मुझे 'नैतिकता' दी हो या न दी हो, लोकनाट्य के प्रति एक ज़बर्दस्त वितृष्णा ज़रूर दी जो बाद में कई दशकों तक बनी रही।

यह भी विचित्र बात है कि मैं उन पिताज़ी से पिटा था जो उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम 'स्वाँग सँपेड़ा' या 'नागर-सभा' के एकमात्र जीवित

उस्ताद हैं।

मज़े की बात तो यह है कि न खुद मेरे पिता को इस 'एकमात्र जीवित उस्ताद' होने का आभास था न मुझे ही। मैं तो उनके 'स्वाँग सँपेड़े' को भूल ही गया था। खुद मेरे पिता 'स्वाँग सँपेड़ा' को घटिया चीज मानने लगे थे और, अक्सर अपनी नकल करके लिखी शेरो-शायरी की डींग मारने लगते थे। फिर यकायक मुझे पता चला, मथुरा के रामनारायण अग्रवाल ने 'सांगीत' पर एक महत्त्वपूर्ण किताब लिखी जिसमें उन्होंने मेरे पिता का खासा जिक्र किया। उन्होंने उनसे भेंट भी की। यह सब हुआ श्री अमृतलाल नागर के संकेत पर। जिन दिनों (छठे दशक के शुरू में) नागर जी लखनऊ रेडियो में नाटक के प्रोड्यूसर थे उन्होंने मेरे पिता से रेडियो पर 'स्वाँग सँपेड़ा' के कुछ हिस्से गवाये थे। तब से वे यत्न के साथ इस सूचना को सँजोये हुए थे और पहला मौका पाते ही उन्होंने श्री अग्रवाल को मेरे पिता से भेंट के लिए उकसा दिया।

यह सब उन दिनों हुआ जिन दिनों दिल्ली में नये नाट्यलेखन से मेरे दमाग़ इतने चढ़ गये थे कि एक परिचर्चा में लोकनाट्य की हबीब तन्वीर की सिफ़ारिश के खिलाफ़ मैं लाठी घुमाने लग गया। मेरा खयाल था कि लोकनाट्य मर गया है और उसे मरा रहने दिया जाये, मैं ऐब्सर्ड नाटक लिखूँगा।

मेरी इस धाँधली का जवाब हबीब तन्वीर ने खासा मुँहतोड़ (गोकि मुस्कुराहट के साथ) दिया। और तब पता नहीं क्यों, मैंने एक नौटंकी 'दिशान्तर' के लिए लिखी जिसकी तैयारी गुलशन कपूर करते रह गये।

उसके बाद लखनऊ में एक दिन बंसी कौल ने मुझसे कहा कि उन्हें एक नौटंकी चाहिए। मैंने वायदा भी कर लिया, लेकिन भूल गया। अपनी रिहर्सल से ठीक ग्यारह रोज़ पहले जब बंसी मुझसे दुबारा मिले उस वक़्त तक मैं यह वायदा भी भूल चुका था।

बंसी को मैंने यही कहा कि आधी लिखी जा चुकी है और आधी बाकी है जो दस दिन में लिखी जायगी। दस दिन में आधी नहीं, पूरी नौटंकी लिखी गयी और जल्दबाज़ी का नमूना यह था कि अन्तिम गाना रिहर्सल के दौरान आतमजीत सिंह ने लिखा। कथानक के सूत्र गोगोल

की एक रचना से लिए।

इसमें वर्तमान परम्परा के अनुसार कुछ लोक गीत तो हैं ही, पारसी रंगमंच की 'तर्ज़जंगी' (साफ़ करो साफ़ करो) भी है, लेकिन मूल नौटंकी के छन्दों का प्रयोग ही प्रमुख है।

बंसी की प्रस्तुति और व्यावसायिक रंगमंडलियों की प्रस्तुति में बहुत बड़ा अन्तर है। जहाँ व्यावसायिक मंडलियाँ सबसे कम व्यावसायिक नाट्य-कौशल का इस्तेमाल करती हैं, वहाँ बंसी ने इसमें आधुनिक नाटक की पेशेवर तकनीक का इस्तेमाल सावधानी और लगन से किया था। मेकअप, रंगदीपन, दृश्यबन्ध और परिधान के मामले में व्यावसायिक मण्डलियाँ बेहद कमज़ोर होती हैं, जबकि बंसी ने इन्हें पूरे कौशल से प्रयुक्त किया था।

गायकी के बारे में कुछेक लोगों ने इशारे किये कि प्रस्तुति के कुछ कलाकार कुशल गायक नहीं थे। जिन्होंने ये बातें कही हैं उन्होंने या तो नौटंकी देखी ही नहीं या फिर वे झूठ बोलते हैं। व्यावसायिक मण्डलियों में मुश्किल से तीन-चार अभिनेता ही अच्छा गाने वाले होते हैं, बाकी कामचलाऊ और अक्सर खासा बेसुरा गाते हैं। इनमें शास्त्रीय गायक कोई नहीं होता और उन आलोचकों को यह जानना चाहिए कि शास्त्रीय गायक आमतौर पर नौटंकी गा नहीं सकता। अपनी नयी नौटंकी की प्रस्तुति करते वक़्त मैंने यह महसूस किया। कुछ भातखण्डे संगीत विद्यालय के अच्छे स्नातक और शास्त्रीय गायक, लोक गायन से अपरिचित होने के कारण नौटंकी की तर्ज़ें उतनी अच्छी तरह नहीं गा सके जितनी अच्छी तरह बिना सीखे कुछ अन्य कलाकार गा लेते थे।

अभी इस बात का अध्ययन बाकी है कि आदमी का अपनी लोक-कलाओं से मानवशास्त्रीय रिश्ता कैसा होता है। अभी हाल में एरिज़ोना विश्वविद्यालय के डॉ० अनूप चन्दोला ने हिमप्रदेश के लोक वाद्यों (ताल-वाद्य) का अध्ययन किया है। सच यह है कि नागर संस्कार बहुत हद तक कलासंस्कार को नुकसान पहुँचाते हैं। नागर संस्कारों से अछूते समाज का आदमी कला की दृष्टि से अधिक मौलिक और संवेदनशील होता है। उसके लिए कला साध्य नहीं साधन होती है, इसलिए कला के साथ

वह नागर संस्कार सम्पन्न व्यक्ति की अपेक्षा कहीं अधिक निस्संकोच होता है। नागर संस्कार-सम्पन्न के लिए कला परिणीता बीवी होती है जबकि लोक-कलाकार के लिए वह अभिसारिका प्रेयसी होती है, इसीलिए वह कला से ज्यादा उद्दाम सम्बन्ध बना लेता है। किसी तान को लचक के साथ 'होए' करके झटके से तोड़ने का खतरा शास्त्रीय कलाकार कभी नहीं उठाता जबकि लोकगायक इसमें संकोच नहीं करता। गाते-गाते बीच में 'हो रामा' जैसा नारा लगा देने में भी उसे कोई हिचक नहीं होती।

व्याकरण, शास्त्र-सिद्धान्त और नीतिबद्धता के तर्क एक हैं और आपस में इन्हें जोड़ते हैं। जो कला शास्त्रीय होती है वह निश्चयत: सामाजिक मर्यादा के अपने समय के नियमों का भी कठोरता से पालन करती है।

लोक-कलाकार के लिए स्थिति इससे बिल्कुल उल्टी होती है, जहाँ वह शास्त्रीयता के व्याकरण को बचाकर चलता है वहाँ सामाजिक मर्यादा से भी कतराता है। जहाँ होली जैसे उन्मुक्त-पर्व पर बेशुमार लोक-साहित्य रचा गया वहाँ नागरिक सम्पन्नता और सुरुचि की प्रतीक दीवाली को लेकर वैसी रचनाएँ बहुत ही कम और कमज़ोर हैं। धार्मिक विभूतियाँ, जिनमें लोक-कलाकार का मन रमता है वे हैं देवी, शिव और कृष्ण। राम उसे उतना नहीं मोहते बल्कि राम के विरुद्ध एक सोहर ही रच डाला गया। विष्णु, नारायण, ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवता उसे ज़्यादा पसन्द नहीं। देवी, शिव और कृष्ण में कहीं वह अपनी उच्छृंखलता और सामाजिक मान्यताओं से उल्लंघन के सूत्र खोज लेता है।

लोक-कलाकार (विशेषत: गायक, नर्तक या अभिनेता) इसीलिए अक्सर समाज-व्यवस्था से थोड़ा-सा बाहर रहता है। वह खुद भी व्यवस्था से बँधता नहीं है और व्यवस्था भी उससे कम ही लेना-देना रखती है। मनोरंजन करने वाले कलाकार को शहर से बाहर ठहराने की व्यवस्था मनु ने दी थी। लोक-कलाकार तब से शहर के ही नहीं, समाज के भी बाहर ही रहता आया है।

इसीलिए शायद और भी ज्यादा अपवाद उसके साथ जुड़ गये हैं। जो

दुनिया हम सीधे नहीं जानते और जिस दुनिया से हम सामाजिक सम्बन्ध नहीं रखना चाहते उसके बारे में तरह-तरह के अपवाद जोड़ लेते हैं। उनकी अनैतिकता का और उनके विकारपूर्ण होने का खूँखार चित्र गढ़कर हम अपने भद्र-समाज के आदमी को उधर जाने से रोकते हैं।

यह भी विचित्र बात है कि खुद उस समाज में भी ऐसा अपवाद घर कर गया है। अभी हाल में मेरे एक पूर्वाभ्यास के बीच कलाकार लोग फ़ुटपाथ पर एक मैले हारमोनियम और ढोलक के साथ सुरीले गाने गानेवाले कुछ कठपुतली कलाकारों को बुला लाये। ये कठपुतली कलाकार अपने खाली वक़्त में सड़क के किनारे फ़िल्मी गाने गाकर पैसे इकट्ठे करते हैं। उन बच्चों (एक तो लगभग दस साल से भी कम रहा होगा) के गले में अद्भुत लोच, सुरीलापन और गायन में जबर्दस्त बल था। नौटंकी की कुछ तर्जें सुनाने के हमारे आग्रह पर वे बच्चे जैसे आहत होकर प्रतिवाद-सा करते हुए बोले—'हम नौटंकीबाज नहीं हैं।'

नौटंकी के बारे में यह विचार उनके अन्दर जाहिर है, हमसे पहुँचा है।

लोकनाट्य की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता होती है उसकी शिल्पगत महाकाव्यात्मकता। बर्तोल्ट ब्रेख्ट ने बहुत बाद में उसकी वैसी परिभाषा की जैसी भारतीय लोकनाट्य में बहुत पहले से विद्यमान है।

कोई भी कथानक हो, नौटंकी की प्रस्तुति में वह समसामयिक देश-काल के बोध को प्रतिबिम्बित करता है। इसके लिए सिर्फ़ पात्रों द्वारा टिप्पणियाँ ही नहीं होतीं, बल्कि मूल चरित्रों के स्वभाव और आचरण में समसामयिकता की एक तस्वीर ज़रूर होती है। उसका देवता या राजा भी आज के आम आदमी जैसा होता है और उसकी क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं में हम आस-पास की और अपनी तस्वीर देख सकते हैं। देवता और महाराज भी नहा-धोकर नेम-धरम से खाते हैं और रानी-महारानी भी रसोई तैयार करती हैं।

इसीलिए इस विधा में समसामयिक सामाजिक समीक्षा की बहुत बड़ी गुंजाइश होती है और अभिनेता अक्सर आलेख से बाहर की टिप्पणियाँ करने से अपने को रोक नहीं पाते।

एक बहुत बड़ी बात ध्यान देने की है : नृत्य और गायन के माध्यम से अभिव्यक्त होने वाले रंग-अनुभव की अभिनय पद्धति आमतौर पर यथार्थवादी नहीं, आशिल्पित (स्टाइलाज्ड) होती है जैसे काबूकी, यक्षगान, कथकली या ओडिसी में। अत्तम में भी अभिनय आशिल्पित होता है जबकि नौटंकी में (और तमाशा तथा माच में भी) अभिनय, अच्छा अभिनय आशिल्पित नहीं, यथार्थवादी होता है। गायन और नृत्य के साथ यथार्थवादी अभिनय काफ़ी मुश्किल काम है लेकिन यह इस विधा में इसलिए आसान हो जाता है कि महाकाव्यात्मक शैली के कारण इसका कथ्य समसामयिक इतिहास-बोध से जुड़ा होता है। कृष्ण हों या अमरसिंह राठौर या मजनूं, इन सभी चरित्रों में कलाकार अपने व्यक्तित्व का आरोपण करता है। बजाय इसके कि वह पात्रानुकूल अपने व्यक्तित्व को बनाये, पात्र को अपने व्यक्तित्व में समेटता है। इससे उसे एक बड़ी और खुली हुई ज़मीन मिलती है।

नौटंकी प्रस्तुति का एक बहुत बड़ा गुण है उसकी नाटकीयता, उसका थियेट्रिकल होना। इसके अतिरंजित अभिनय में भी एक खास आत्मविश्वास और संयम का समावेश होता है और प्रस्तुति में अनायास ही भड़कीलापन और उत्तेजना पैदा हो जाते हैं। नौटंकी की प्रस्तुति दर्शक को अनौपचारिक बनाती है। उसका सम्प्रेषण इतना तेज और सशक्त होता है कि दर्शक का विवेक रौंद जाता है। 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' जहाँ दर्शक को चुभकर रुलाता है वहाँ लैला-मजनूं या अनारकली उसकी छाती पर घूंसा मारकर रुलाती हैं।

रूसी नाट्यनिर्देशक वाख्तैंगाफ़ ने नौटंकी में नाटकीयता की प्रयुक्ति के काफ़ी बाद इसी नाटकीयता की प्रतिष्ठा की। दरअसल उसकी यह खोज स्वयं लोककला से जुड़ने का एक अनायास परिणाम थी, न कि आविष्कार।

नौटंकी का उद्दाम वेग कई तत्त्वों का परिणाम होता है। बेहद चटकीली हिन्दुस्तानी ज़बान की वह कविता जिसमें उर्दू कविता के करीब की रंगीनी मौजूद रहती है इसका पहला महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। दूसरा तत्त्व है इसकी उन्मुक्त और लोक-धर्मी गायकी। इस गायकी में कलात्मक

बारीकी के बजाय उत्तेजक लयात्मकता होती है। इसके बाद दो महत्त्वपूर्ण तत्त्व और होते हैं ताल और, नृत्य की अपेक्षा नृत्त। नृत्त भारतीय संस्कृति में सिर्फ़ लोकधर्मी विधाओं के पास ही बचा है और उसका भरपूर इस्तेमाल नौटंकी करती है। अभिनयात्मक नृत्य नौटंकी में शुद्धता के साथ कहीं इस्तेमाल नहीं होता। उसकी ज़रूरत ही नहीं होती बशर्ते कि नाटक की आवश्यकतानुसार (जैसे 'अनारकली', 'नूरानी मोती', और 'सुल्ताना डाकू') नाच का टुकड़ा ही न जुड़ा हुआ हो। नौटंकी के समूचे अभिनय में एक थिरकन होती है।

ताल के लिए नौटंकी में बेहद उदात्त और अतिस्वरित नक्क़ारे का प्रयोग होता है। गानों के बीच तबला और ढोल भी चल जाती है लेकिन नौटंकी जमती नक्क़ारे से है। नक्क़ारे का इस्तेमाल नौटंकी में अन्य संगीत विधाओं की तरह ताल की संगत के लिए नहीं होता। नौटंकी की यह विशेषता बहुत गहराई से ध्यान देने योग्य है। नक्क़ारा संगत के बजाय स्वतन्त्र नाटकीय प्रदर्शन होता है और फिर भी मूल नाटक की गति को न कहीं रोकता है और न ही उससे अलग दीखता है। नौटंकी की बुनावट में स्वाधीन या स्वायत्त प्रदर्शन होने के बावजूद वह इस तरह नाटक का अन्तरंग बन जाता है कि उससे प्रस्तुति को जबर्दस्त उत्तेजकता प्राप्त होती है। नक्क़ारा छन्दों के साथ महज़ अपनी निरन्तरता के निर्वाह के लिए कहरवा या अन्य संगत ताल में हल्के-हल्के बजता है। नक्क़ारा काफ़िया रदीफ़ की सम से नहीं बल्कि उसकी अगली मात्रा से गत या परन उठाता है। यह स्थिति खासी जटिल होती है।

छन्द की गायकी समाप्त होने के बाद एक मात्रा छोड़कर परन बजाई जाती है। उस बीच गायक सिर्फ़ नृत्त करता है या हल्के ठुमके भर लेता है और नक्क़ारा बेहतरीन अदाकारी दिखाता है। आम संगीत नृत्य नाटिकाओं में एक मात्रा का यह अन्तराल सँभाला नहीं जा सकता, जबकि नौटंकी में इसका पता ही नहीं चलता और उस एक मात्रा के घोटाले से जबर्दस्त नाटकीयता पैदा हो जाती है।

आधुनिक नृत्य गीति नाट्यों में से किसी को भी उतनी सफलता नहीं मिली, जितनी नौटंकी को। इसके पीछे नक्क़ारे का यह कुशल प्रयोग ही

है। साधारणतः नृत्य गीतिनाट्य उबाऊ विधा होती है। उत्तेजना-भरे संवाद को नाच-गाकर बोलने पर उसकी उत्तेजना ठस हो जाती है। नौटंकी में यह नहीं होता। इसका बड़ा श्रेय इसकी विशिष्ट लय को जाता है। चुनौती-भरे संवाद को दौड़ के रूप में जब गाया जाता है तब पहली दो तेरह मात्राओं वाली पंक्तियों के गायन के साथ कहरवा बजता है और दो पंक्तियों के बाद एक मात्रा कूदकर नक्कारा लम्बी और अक्सर खासी आड़ी (अगर दृश्य तानाकशी का है) परन बजाता है और तिहाई पूरी करता है और तिहाई के बाद गायक ताल से बाहर ही तीसरी पंक्ति उठाता है।

लय, ताल और स्वर का यह विशिष्ट संयोजन नौटंकी की बहुत बड़ी शक्ति है।

इस विधा ने प्रस्तुति में कुछ अपनी खोजें की हैं। ये खोजें असाधारण हैं।

विश्वरंगमंच में नाट्य प्रस्तुति के दो विधान बहुत महत्त्वपूर्ण हैं—एक पश्चिम में कोरस द्वारा कथागायन और दूसरा भारत में सूत्रधार द्वारा कथा प्रस्ताव। तीसरा शिल्प आधुनिक नाटकों का है जिनमें सीधे नाटकीय कथा ही पेश कर दी जाती है।

नौटंकी ने रंगा या कवि, अपनी सुविधा के लिए स्वतन्त्र रूप से, खोजा। वह कोरस और सूत्रधार, दोनों का ही काम करता है। एक ही पात्र रंगा या कवि, कथा की प्रस्तुति भी करता है, कथा प्रवेश भी कराता है और बीच-बीच में कथा के ग़ैर नाटकीय ब्योरे भी देता है। कोरस जहाँ गायक दल होता है और अक्सर नाटक से जुड़े पात्रों की भूमिका भी करता है वहाँ रंगा या कवि अकेला होता है और केवल कथावाचन करता है। सूत्रधार का काम कथा-प्रवेश कराने के बाद कथा समापन के समय ही दुबारा दिखायी देता है (आमतौर पर) वहाँ रंगा या कवि निरन्तर मौजूद रहता है।

नौटंकी की अपनी दूसरी महत्त्वपूर्ण खोज है (आविष्कार नहीं) एरेना थियेटर यानी दर्शकों के बीच रंगमंच। निश्चयतः यह प्रयोग नौटंकी ने लोकनाट्यों से उधार लिया है।

इसमें सन्देह नहीं है कि नौटंकी में ठहराव आया है, गोकि इसे पतनशीलता कहना बेजा होगा। नौटंकी में नये आलेखों की बेहद कमी महसूस की जा रही है। श्रीमती गुलाबबाई ने तो यहाँ तक कह दिया कि दर्शक सैकड़ों बार लैला-मजनूं या सुल्ताना डाकू देख-देखकर तंग आ चुके हैं। यही वजह है कि नौटंकी में आज या तो मँजी हुई अभिरुचि के दर्शक कलाकारों का विशेष गायन (जैसे गुलाबबाई के दादरे) पसन्द करता है या फिर आम दर्शकों के लिए खास तौर से नाच-गाने देने पड़ते हैं। यह नौटंकी का पतन नहीं बुद्धिजीवियों की बेग़ैरती है। वे नये आलेख दे नहीं सकते, इसलिए विधा को जिलाये रखने के लिए अनावश्यक मुजरे नौटंकी की मजबूरी है।

× × ×

'आला अफ़सर' मेरे लिए रचनात्मक दृष्टि से उपलब्धि है यह मैं न मानूं (मानना चाहता नहीं) तो भारत के उन तमाम रंगविवेकी बन्धुओं के प्रति अनुदारता होगी, जिन्होंने इस रचना को बेहद पसन्द किया है। लेकिन सच यह है कि इसके पीछे एक बड़ा खतरा अगर न देखा जाय तो समूची भारतीय रंगप्रक्रिया का अपमान होगा।

जिस तरह फ़िल्मों में मारधाड़ और औरतबाजी का एक फार्मूला बन गया है उस तरह संयोग से राजनीतिक फ़िक़रेबाज़ी का फार्मूला नहीं बना। इसलिए अच्छे सामाजिक कथ्य वाली फ़िल्मों की गुंजाइश बाकी है। वहाँ 'किस्सा कुर्सी का' जैसी सस्ती फ़िक़रेबाज़ी वाली चीज़ अस्वीकृत हो चुकी है, लेकिन दुर्भाग्य से नाटक में यह प्रवृत्ति खासा व्यापक फार्मूला बनती जा रही है।

नये निर्देशकों की रुझान दुर्भाग्यवश इसी राजनीतिक फार्मूलेबाज़ी में रह गयी है। राजनीति की गहरी, अन्तरंग और मानवीय संवेदनाओं की धुरी पर घूमने वाली नाटकीय समझ उनमें नहीं है। वे बर्तोल्ट ब्रेख्ट का नाम लेकर एक छिछले 'कमिटमेण्ट' का जिक्र बेहद आसानी से करने लग जाते हैं और किसी भी खोखली नारेबाज़ी को मंचित करके ब्रेख्ट-धर्मी होने का आश्वासन पा लेते हैं। 'प्रतिबद्धता' का जैसा दुरुपयोग और उसकी जैसी दुर्दशा साहित्य की सतही समझ वाले लोगों ने की है

वैसा ही बलात्कार इस शब्द के साथ नये निर्देशकों ने करना शुरू कर दिया है।

प्रतिबद्धता के बलात्कार की आदत दुर्भाग्य से एक ऐसी संस्था में पड़ती है जिसकी रचनात्मक सार्थकता के बारे में मैं हमेशा संदिग्ध रहा हूँ। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय एक ऐसी फ़ैशनपरस्त संस्था है जो न तो नाटक की गहरी समझ देती है और न ही सामाजिक विवेक की। वह छन्द और अलंकार सिखाकर कवि पैदा करने की कोशिश करती है। उसका ख़याल है कि छात्र पढ़कर रचनाधर्मी होता है। कभी विश्व-विद्यालयों के कला-निकायों को भी यही मुग़ालता हुआ करता था और पी-एच० डी० करने वाला साहित्य का मर्मज्ञ हो जाया करता था। बाद में इसका भेद खुल गया। जिस तरह साहित्य में एम० ए० पढ़कर कोई साहित्यकार नहीं होता, उसी तरह नाट्य विद्यालय का स्नातक होकर भी रंग रचनाकार नहीं हुआ जाता।

इसका एक बड़ा प्रमाण यह है कि कई बरस के शिक्षण के बावजूद विद्यालय अपने स्नातकों में एक आत्मविश्वास तक पैदा नहीं कर पाता। विद्यालय का कोई भी स्नातक डिस्टेम्पर में ब्रुश डुबोना सीखने के साथ ही नाटककार को गाली देना सीखने लगता है। यह आत्मविश्वास की कमी से ही होता है।

मैं यह क़तई नहीं मानता कि नाटककार नाट्य-निर्देशक से बड़ा होता है। बल्कि वह स्पष्ट रूप से नाट्य निर्देशक से छोटा होता है ठीक उसी तरह जिस तरह दृश्यबंधकर्ता, रंगदीपक या अभिनेता निर्देशक से छोटा होता है, निर्देशक की कमान में काम करने को बाध्य होता है। लेकिन इसका मतलब यह क़तई नहीं होता कि वह हेय और अपमान योग्य होता है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का स्नातक यह मुग़ालता लेकर बाहर आता है कि वह दूसरे चाहे किसी से कम जानता हो, लेखन को लेखक से ज़्यादा जानता है। ऐसा ही मुग़ालता विश्वविद्यालय के स्नातक को भी हुआ करता है और यही मुग़ालता कला का दुश्मन बनाने के पूरे साधन जुटा देता है।

इसी बात का एक दूसरा पहलू देखिए : नाटक में किसी नयी पद्धति

का आविष्कार ही रंगकर्मी को अपनी जमात में विशेष बनाता है। उत्पलदत्त, हबीब तनवीर, गिरीश कारनाड और विजय तेन्दूलकर के बाद नाट्य विद्यालय की पीढ़ी के निर्देशकों में से एक भी ऐसा नहीं है जिसने रंगप्रक्रिया को नयी दिशा देने का प्रयत्न किया हो। जिस तरह पश्चिम के बड़े निर्देशकों ने रंगमंच पर विचार और शिल्प सम्बन्धी ऐसे प्रयोग किये जो बाद में महत्त्वपूर्ण नाट्य परम्परा बने उस तरह का हल्का-सा प्रयोग या आविष्कार भी इन निर्देशकों ने नहीं किया। उन्होंने आम-तौर पर पहले से उपलब्ध शिल्पों का ही प्रयोग किया है।

यह बात कुछ अनुदार आलोचना लग सकती है लेकिन आज जहाँ हिन्दी रंगमंच पहुँच गया है वहाँ खड़े होकर यह सच न बोलना खुद रंग-जगत के साथ विश्वासघात होगा। किसी-न-किसी को यह कड़वा सच बोलना ही होगा कि पिछले दस-पन्द्रह बरसों में विद्यालय द्वारा व्यापक शिक्षण के बावजूद नाटक शिल्प और विवेक के स्तर पर दूसरों का उगला हुआ काम है, ठहरी हुई प्रक्रिया है और जो कुछ थोड़ा-बहुत नया हुआ वह ग़ैर-विद्यालयी प्रतिभा द्वारा ही हुआ है।

विद्यालय रंगप्रक्रिया के सैद्धान्तिक विचारक तो बिल्कुल ही पैदा नहीं करता। विद्यालय की एक भी प्रतिभा ऐसी नहीं है जिसने रंगप्रक्रिया पर कोई विवेचनात्मक किताब लिखी हो। मैं नहीं समझता कि ऐसी किताब लिखना बड़ी बात है, लेकिन न लिखना ज़रूर विचारणीय बात है। ऐसे मौक़े पर वे रंगकर्मी अगर सैद्धान्तिक विवेचना का काम भी लेखक पर छोड़ते हैं तो निश्चय ही उन्हें लेखक को अपमान योग्य समझना भी छोड़ना होगा। यह अपमान-वृत्ति भी विचित्र है। विद्यालय का स्नातक संगीत का 'स' नहीं जानता और यह चुपचाप स्वीकार कर लेता है लेकिन वह बड़े जोश से कहता है कि जो कुछ लेखक जानता है वह सभी कुछ वह लेखक से बेहतर जानता है।

वह दृश्यबंध की रूपरेखा देनेवाले की रचना में फेरबदल करता है, अभिनेता को सही गति और संयोजन देता है, मुखसज्जाकार और रंग-दीपक तक के काम में जायज़ और अपनी आवश्यकतानुसार परिवर्तन करता है लेकिन इसकी डींग नहीं मारता। कोई निर्देशक यह नहीं कहता

कि अमुक सेट डिजाइन में उसने परिवर्तन किये जबकि आलेख में एक शब्द काटने के बाद वह सहर्ष घोषित करता है और इसमें खासा दम्भ झलकाता है कि उसने अमुक आलेख को 'रि राइट' किया। इस दावे के पीछे जहाँ लेखक को मात देने की एक नीयत छुपी होती है वहीं उसकी अपनी हीन भावना भी झलकने लगती है।

पीछे मैंने यह कहा था कि 'आला अफ़सर' के साथ मुझे अपने लिए एक खतरा महसूस होता है। साहित्य में मैंने छिछोरी प्रतिबद्धता को हमेशा नकारा है। मैंने ही नहीं हर महत्त्वपूर्ण साहित्यकार ने साहित्य की प्राथमिक शर्तें पूरी किये बिना लेखन को ग़लत माना है। सिर्फ़ मजदूर के पक्ष में लिखे होने पर ही कोई रचना साहित्य नहीं होती। उसे रचना की मौलिक शर्तें निभानी होती हैं। इसीलिए रचनात्मक लेखन अलग होता है और सफल लेखन अलग।

ठीक यही स्थिति नाटक की भी है। सफल नाटक की शर्तें दूसरी और साधारण होती हैं, अच्छे रचनात्मक नाटक की शर्तें बिल्कुल ही अलग और असाधारण होती हैं।

'आला अफ़सर' सफल नाटक है जिसमें मैंने साहित्यिक रचनात्मकता के दस फीसदी का उपयोग किया है, बाक़ी चालू माल है, ठेठ फ़िकरेबाज़ी है या फिर चुटकुलेबाजी। इसमें स्थायी मूल्य का कुछ नहीं है; नाट्य-विधा को आगे ले जानेवाला भी कुछ नहीं है। फिर भी 'आला अफ़सर' अत्यन्त सफल नाटक है और यही सबसे बड़ा खतरा है। रचनात्मकता की प्राथमिक शर्तों की अवहेलना करनेवाला अपना लेखन सफल होता हुआ देखना मेरा अपना दुर्भाग्य है। यह उन सभी नाटककारों के लिए कष्टकर होगा जो नाटक की विधा को गहरे भावबोध और गहन रचनात्मकता की ओर ले जाना चाहते हैं।

'आला अफ़सर' की सफलता नाटक की रचनाधर्मिता की मृत्यु है। इस कृति की सफलता के चक्कर में खुद मैं भी आ गया था और काफ़ी दिन फंसा रहा। यहाँ तक कि एक और नौटंकी भी लिख डाली और उसका पूर्वाभ्यास भी शुरू करा दिया। फिर सद्बुद्धि आ गयी। लेकिन देर से। इस बीच नाट्यलेखन मात्र से अरुचि पैदा हो गयी और शायद यह अरुचि बनी रहे। वैसे 'आला अफ़सर' जैसी चीज लिखने से कुछ न लिखना ज्यादा अच्छा होगा।

दुनिया के बड़े नाटककार ऐसे चक्करों में नहीं पड़े, इसीलिए वे बड़े हो गये और मेरे जैसे लोग वैसे नहीं हो पाये, इसका एहसास करना जरूरी है। डॉ० धर्मवीर भारती ने आगे कुछ नहीं लिखा वह ज्यादा अच्छा हुआ। राकेश की रचनाओं से बहुत प्रभावित न हो पाने के बावजूद मैं उनकी बेहद इज्जत करता हूँ कि वे 'आला अफ़सर' जैसी सफल कृति के चक्कर में नहीं पड़े।

हजार सफल कृतियाँ, एक असफल रचनात्मक प्रयोग के मुकाबिले कमजोर होती हैं, न स्वीकार करनेवाला रचनात्मकता का शत्रु ही होगा।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय अपने स्नातकों को प्रयोग की दृष्टि से बेहद डरपोक बना देता है। एकाध प्रयोगधर्मी नाटक करने के बाद वह तुरन्त सफल नाटक खोजना शुरू कर देता है। इसके लिए वह एक निहायत झूठा तर्क पकड़ लेता है। वह कहता है कि वह शहरों के चन्द बुद्धिजीवियों के लिए नहीं, जनता के लिए उसके संघर्ष के तौर पर नाटक करना चाहता है। इस परदे में वह सस्ते मनोरंजन से भरपूर फ़िक़रेबाजी वाले नाटकों की खोज करता है। जो रंगकर्मी नाटक को वैचारिक संघर्ष का माध्यम बनाता है वह ब्रेख्ट की तरह अपना कथ्य खोजता है। विद्यालय का स्नातक 'दो अधूरे ब्रेख्ट' चाहता है यानी आधा ब्रेख्ट नाटककार हो और आधा ब्रेख्ट निर्देशक हो और इन दो आधे-आधे ब्रेख्टों को वह कील ठोंककर जोड़ ले। रंग-रचना में यह सम्भव नहीं होता।

स्नातक एक और बात नहीं समझता। किसी भी रचनात्मक विधा में एक ही प्रतिभा दुबारा पैदा नहीं होती। ताल्स्ताय के बाद दास्ताव्स्की तो पैदा हो सकता है ताल्स्ताय पैदा नहीं हो सकता। गोगाँ के बाद पिकासो पैदा हो सकता है, लेकिन कोई गोगाँ ही दुबारा नहीं बन सकता। स्नातक अनुबन्ध थैले में लेकर घूमता है—आप कृपा करके ब्रेख्ट बन जाइए, ब्रेख्ट की तरह लिख दीजिए।

किसी भी कला का गुणी किसी को यह नहीं कहता कि आप फैयाज खाँ की तरह गा दीजिए या प्रेमचन्द के गोदान की तरह उपन्यास लिख

दीजिए या हुसैन की तरह घोड़ा रंग दीजिए। हर कला-रसज्ञ स्वायत्त, अप्रभावित और मौलिक प्रतिभा की तलाश करता है लेकिन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय छात्रों के दिमाग में इतना भ्रम भरने में सफलता पा लेता है कि छात्र बाद में ब्रेख्ट या मोलियर या गोर्की के नाटक 'जैसा' नाटक लिखाते फिरें।

मूलतः सभी तरह की शिक्षण संस्थाएँ शिक्षा लेने वाले के अन्दर ख्यात और स्थापित प्रतिभाओं को लेकर हीन भावना भरती हैं और छात्रों के लिए वे प्रतिभाएँ अन्तिम प्रतिभाएँ होती हैं। रचनाधर्म में अन्तिम कुछ नहीं होता।

इसका अर्थ यह भी नहीं होता कि आगे आनेवाली प्रतिभा ब्रेख्ट को छोटा कर देती है या उससे आगे निकल जाती है। नयी प्रतिभा अपनी स्वतन्त्र खोज करती है। ब्रेख्ट ही नहीं यू जीन ओ नील और बेकेट भी महत्त्वपूर्ण हैं। बेकेट ब्रेख्ट की तरह लिखकर बेकेट कभी नहीं बनते।

'आला अफ़सर' की ख्याति कुछ इसी तरह की घटना है। नौटंकी मेरा आविष्कार नहीं है। छन्दबद्ध कविता का घटियापन बहुत बचपन में छोड़ चुका था और हास्य-व्यंग्य लेखन के प्रारम्भिक काल में करता था। 'आला अफ़सर' ने फिर वहीं ले जा खड़ा किया। अब वहीं खड़े रहना मुझे कतई पसन्द नहीं है। मैं मानता हूँ कि इस माध्यम में शक्ति है। लेकिन शक्ति तो साँड़ में भी होती है और साँड़ को पालने में ज्यादा रुचि लेना सम्भव नहीं है।

—मुद्राराक्षस

'आला अफ़सर' की पहली प्रस्तुति श्री बंसी कौल के निर्देशन में मध्यप्रदेश कला परिषद् भोपाल के 'गौरव नाट्य समारोह रजत रंग' में २ नवम्बर १९७७ को

मंच पर

चेयरमैन	: प्रयाग वर्मा
हाकिम	: विजय वास्तव
इन्स्पेक्टर	: अनिल रस्तोगी
हेडमास्टर	: सुधीर शर्मा
पोस्टमास्टर	: गिरीश श्रीवास्तव
घोखे	: मुद्राराक्षस
अनोखे	: हरिकृष्ण अरोड़ा
श्रीमती	: सबा जैदी
चंचल शोभन	: शोभना जगदीश
देवदत्त	: स्वदेश बन्धु
खादिम	: विजय तिवारी
रंगा	: आतमजीत सिंह
चौकीदार बेयरा	: कार्तिक अवस्थी
गुण्डू	: अयोध्या प्रसाद गुप्त
फरियादी	: विवेक हरिनारायण रमाशंकर वाजपेयी मोहम्मद अख्तर वीरेन्द्र रस्तोगी
कोरस	: मधुकर चतुर्वेदी राजेश्वर सहाय

	एम० एल० पांड्या
	कार्तिक अवस्थी
	विजय तिवारी
	वीरेन्द्र रस्तोगी
	रमाशंकर बाजपेयी
	अयोध्या प्रसाद गुप्त
	विवेक हरिनारायण
संगीत संयोजन :	मनोहर स्वरूप
सहायक :	मोहम्मद अज़ीम
नक्क़ारा :	शिब्बन खाँ
हारमोनियम :	महमूद खाँ
मंच व्यवस्था :	प्रयाग वर्मा
	रमाशंकर बाजपेयी
सहायक :	वीरेन्द्र रस्तोगी
सामग्री :	अयोध्या प्रसाद गुप्त
	विवेक बाजपेयी
प्रमुख सहायक :	सुधीर शर्मा
परिधान और दृश्य बंध :	सबा ज़ैदी

आला अफ़सर

(सभी पात्रों द्वारा समवेत गायन)

सभी : गाइए गणपति जय वन्दन।

जिनके कान न सुनते क्रन्दन,
गाइए गणपति जय वन्दन।
हर सवाल का सदा एक हल
नारे घिसो लगाओ चन्दन
गाइए गणपति जय वन्दन।
घुटता देश गन्धाता शासन
बहुत हुआ अब जागो जन मन
गाइए गणपति जय वन्दन।

रंगा : (सामने आकर) हाँ तो अपने मेहरबान कद्रदान लोगों के सामने आज हम एक ऐसा खेल दिखाने जा रहे हैं जो खेल कम है सच्चाई ज्यादा है। क्या है?

कोरस : सच्चाई!

व्यक्ति १ : (उछलकर दर्प के साथ आगे आता है) कहाँ है मेरा भाई? मैं कोतवाल हो गया। दरोगा बनने की बारी उसी की आई।

व्यक्ति २ : (उसे हिकारत से घूरकर) अच्छी सुनाई, थैली की आवाज़ नहीं देती सुनाई? लाइसेन्स की बारी तो मेरी आई।

व्यक्ति ३ : (कोई अफ़सर) हलो। ह्वाट? खाबिन्द का मामला लाई है लुगाई? अगर औरत हसीन हो तो कह दो खाबिन्द ने

तरक्की पाई !

व्यक्ति ४ : (फोन पर ही) येस ? हाँ मंत्री बोल रहा हूँ भाई. क्या बाजार में राशन नहीं देता दिखाई ? अरे फौरन करो सप्लाई और बोलो क्या-क्या चीज़ बाजार में आई।

व्यक्ति ५ : (**काला बाज़ारिया आकर मंत्री के चरण पकड़ लेता है**) अरे मेहरबान मेरी भी हो जाय सुनवाई। हुजूर कोई चीज मेरे हाथ में देती है दिखाई ?

व्यक्ति ४ : हाँ रुपयों की मोटी-सी गड्डी है छुपाई। (**ललचाता है**)

व्यक्ति ५ : ठीक महाराज, (**रुपया उसे सौंपता है**) इसे रखिए और चार दिन और रोकिए माल की सप्लाई। मेरी भी बन जाय एकाध पाई।

व्यक्ति ६ : (**बेहद फटेहाल आदमी**) अरे कोई मेरी भी कर लो सुनवाई !

व्यक्ति १ : ए, क्या हे बे ? तेरे को क्यों आ रही है बेवक्त रुलाई ?

व्यक्ति ६ : एक बहुत गरीब आदमी हूँ सरकार। काम-धंधा मिलता नहीं, एक झोपड़ी थी वो भी तोड़ गिराई। कोई मेरी भी कर लो सुनवाई।

व्यक्ति १ : हूँ। जरूर होगी सुनवाई। थानेदार, हवलदार को बोलो सिपाहियों से इसकी करादें ठुकाई।

(**व्यक्ति ६ चीखता है। दो व्यक्ति उसे घेरकर पीटते ले जाते हैं**)

रंगा : (**व्यक्ति ६ की दूर जाती चीखों को काटते हुए ऊँची आवाज में**) हाँ तो मेहरबान कद्रदान यह तो हमने बानगी दिखाई अब देखिए खेल या जमाने की सच्चाई !

कोरस : भेड़ के चेहरे पहनकर
आ गए हैं भेड़िए।
खैर बकरे की मनाए
माँ कहाँ तक देखिए।।

खून इनके मूँ लगा है
ये न छोड़ेंगे मिसाल।
नाग जहरीले हैं ये
बन्दों को डसने के लिए।।
बाँटता अन्धा बताशे
दे के खुद को बार बार।
स्वारथी लोगों की दुनिया
तोड़ देनी चाहिए।।

रंगा : (दोहा)
कस्बा चितपुर नाम का बसा शहर से दूर।
ओहदेदार जहाँ किए मिली भगत भरपूर।।
(**चौबोला**)
मिली भगत भरपूर वहाँ इक चेयरमैन कहलाते हैं।
उनसे मिलकर ऊँचे अफ़सर भारी मौज उड़ाते हैं।।
हेडमास्टर एक, एक दारोगाजी कहलाते हैं।
पोस्टमास्टर, हाकिम साहब सुर में सुर मिल गाते हैं।।
(**बहरतवील**)
चेयरमैन जी ने सुना एक दिन
आने वाला है दिल्ली से हाकिम बड़ा।
जाँच पड़ताल कस्बे की करने को वो
छुपके याँ पर रहेगा वो अफ़सर कड़ा।।

चेयरमैन : (**घबराहट में**)
(दोहा)
हाकिम सारे हैं कहाँ कहाँ लगाई देर।
अरे अर्दली के पिसर बाहर जाकर टेर।।

(**अर्दली बाहर जाकर हाकिम, पोस्टमास्टर, इन्स्पेक्टर और हेडमास्टर को ले आता है**)

हेडमास्टर : (दौड़) सुना जैसे सन्देसा

इन्स्पेक्टर : हुआ मुझको अन्देसा

पोस्टमास्टर : मुसीबत आई कैसी

हाकिम : काँप रहे हैं आप कौन-सी आफ़त आई ऐसी ।

चेयरमैन : (दोहा)

आदाबर्ज हज़रात को आए याँ पर आप ।
बुरी खबर है आ रहा हम लोगों का बाप ।।

(चौबोला)

हम लोगों का बाप आ रहा इसीलिए जी घबराया ।
मैंने आप सभी को याँ पर भेद बताने बुलवाया ।।
बहुत बड़ा अफ़सर दिल्ली का इस कस्बे में है आया ।
छुपकर जाँच करेगा हम सबकी सन्देशा है पाया ।।

(बहरतवील)

राजधानी में इक मेरा हम जुल्फ़ है
उसने चुपके से मुझको है इक खत लिखा ।
खत का मजमून सुनिए जरा ध्यान से
बाद में सारी बातें मैं दूंगा बता ।।
बात दरअस्ल ऐसी है तुम भी सुनो
देखा कल एक सपना था मैंने बुरा ।
चार मोटे गधे थे मुझे सूंघते
उनके हाथों में था एक मोटा छुरा ।।

हाकिम : (दोहा)

खतरनाक था ख्वाब ये, प्रभुजी देंय बचाय ।
मगर जरा वो खत हमें भी दीजे पढ़वाय ।।

चेयरमैन : खत ? लो तुम भी सुन लो ।

व्यक्ति १ : मेरे प्यारे हमज़ुल्फ़—
यहाँ सब खैरियत है और मेरा खयाल है कि तुम भी अपने चमचे अफ़सरों के साथ पाँचों उँगलियाँ घी में शराबोर कर रहे होगे ।

इन्स्पेक्टर : ऐं ? क्या लिखा है ?

चेयरमैन : कुछ नहीं, कुछ नहीं । आगे पढ़ो—

व्यक्ति १ : मैं यह खत बहुत जल्दबाज़ी में लिख रहा हूँ क्योंकि मामला बहुत संगीन है । यहाँ दिल्ली की सरकार ने एक आला अफ़सर तुम्हारे कस्बे में भेजा है जो तुम सबकी खासी जाँच-पड़ताल करेगा । वह वहाँ आम शहरियों की तरह छुपकर रहेगा । पोशीदा तौर पर जाँच करेगा । मुझे मालूम हुआ है यह खुफ़िया जाँच तुम्हारे लिए बहुत खतरनाक साबित हो सकती है क्योंकि तुम्हारा मामला तुम्हें बेहतर मालूम है । मेरी सलाह है कि मामला बड़ी होशियारी से सँभालना बाक़ी सब ठीक-ठाक है । तुम्हारा जो इश्क अपने हाकिम की बीवी से चल रहा था—

हाकिम : ऐं ?

चेयरमैन : बस-बस, इतना ही काफ़ी है ।

हाकिम : मगर उसमें आपके इश्क के बारे में—

चेयरमैन : माई डियर हाकिम तुम्हें इश्क सूझ रहा है और हमें दिल्ली से आए आला अफ़सर का डर खाए जा रहा है । अगर हमने जल्दी ही कुछ नहीं किया तो हम सब तबाह हो जायेंगे ।

हेडमास्टर : क-क-कबाड़ा हो जायगा ।

पोस्टमास्टर : एक-एक करके हम सबकी नानी मरेगी ।

इन्स्पेक्टर : और हमीं से कन्धा दिलवाएगा आला अफ़सर ।

हाकिम : मगर इतने कस्बों में से वह हमारे ही कस्बे में क्यों आ रहा है ?

चेयरमैन : ये तो इत्तफ़ाक है । कोई भी कस्बा हो सकता था । लेकिन एक बात बता दूं, तुम लोगों को अपना-अपना मामला ज़रा ठीक करना पड़ेगा ।

रंगा : (दोहा)

एक दूसरे पर वहाँ शुरू हुए आरोप ।
हर अफ़सर की पीठ पर आ पहुँची थी तोप ।।

(चौबोला)
आ पहुँची थी तोप वहाँ हर इक अफ़सर घबराया था।
सबके दामन दाग़ भरे हर दाँत को लहू लुभाया था।।
किया किसी ने ग़बन, बेचकर दफ्तर ही को खाया था।
घूस किसी ने लिया और झूठा दसखत बनवाया था।।

हाकिम : (बहरतवील)
मुझसे कहते हैं क्या ओ चेयरमैन जी
काम हकले का देखें जरा गौर से।

हेडमास्टर : ह-ह-हकला ?

हाकिम : मुझसे कहते हैं क्या ओ चेयरमैन जी
हेडमास्टर की करनी को देखें जरा।
सात कमरे थे कस्बे के इसकूल के
पाँच कमरों में इसने है भूसा भरा।।

हेडमास्टर : बात हाकिम की सुनिए न बिल्कुल कभी
अपने साले को ठेके हैं इसने दिए।
जो बना था कुआँ अब गढ़ा भी नहीं
मुर्गीखाने हैं दफ्तर के कमरे किए।।

चेयरमैन : (दोहा)
ये सारी सच बात है सुन लो कान लगाय।
दफ़्तर से वो मुर्गियाँ फौरन दो हटवाय।।

हाकिम : (बहरतवील)
डेढ़ मुर्गी जो पाली तो पीछे पड़े
कोतवाली की हालत तो देखें जरा।
इसके सारे सिपाही नशेबाज़ हैं
वर्दियों को दरोगा ने गिरवी धरा।।

इन्स्पेक्टर : झूठ सारा बयाँ कर रहे आप हैं
पोस्टमास्टर ने सबके भरे कान हैं।
खुद यही माँगने आ गया वर्दियाँ
बोला बच्चों को खाकी का अरमान है।।

माल सरकार का मैं न दूँगा तुम्हें
तब ये बोला कि आओ जी खेलें रमी।
बेईमानी से इसने हराया मुझे
हो गई थी वहाँ नोट की कुछ कमी।।
बस उधारी में वर्दी उठा ले गया
पोस्टमास्टर से पूछो कि सच और क्या।
बाद में मुझको मालुम हुआ वर्दियाँ
काटकर इसने निक्कर ली अपनी सिला।।

चेयरमैन : (दोहा)
समझा मैंने खूब हैं सब के सब उस्ताद।
भाँग कुएँ में, कहाँ तक और खुजाएँ दाद।।
(दौड़)
कहाँ तक दाद खुजाएँ
भेद किसका खुलवाएँ
सभी आओ मिल जाएँ
भाँडा सबका फूटता सब मिल इसे बचाएँ।।
(बहरतवील)
आओ जल्दी करो, ठीक सब कुछ करो
या खुदा जाने हम सबका होना है क्या।
आला अफ़सर जो दिल्ली से आया यहाँ
उसको खोजो तो देखेंगे रोना है क्या।।

कोरस : (कहरवा)
ढूंढो ढूंढो रे अफ़सर आला।
जब से उसकी खबर है आई
हाय सबकी है शामत लाई
आज किससे पड़ा है पाला।
ढूंढो ढूंढो रे अफ़सर आला।।
आज तक लूटते थे जो हमको
शेर बनकर डराते थे हमको

हो गया उनका भी मूँ काला।
ढूँढो ढूँढो रे अफ़सर आला॥

(चोखे और अनोखे जोकि निहायत आलसी और मक्कार हैं, चेयरमैन को दिखाना चाहते हैं कि उन्होंने खासे तीर मारे हैं। दोनों हाँफते हुए चेयरमैन के पास पहुँचते हैं)

चोखे : हद हो गई।

अनोखे : गजब हो गया।

सभी : क्या हुआ ?

चोखे : मैं अभी पोपटलाल के होटल की तरफ़ से निकला।

अनोखे : वैसे हमारा कोई इरादा नहीं था बस वैसे ही पोपटलाल के होटल की तरफ़ जा निकले।

चोखे : अनोखेलाल किस्सा तो मैं सुना रहा हूँ !

अनोखे : मैं तुमसे ज्यादा अच्छी तरह सुना सकता हूँ।

चोखे : तुम आधी बात गोल कर जाओगे, बाक़ी बातें उलट-पुलट कर बताओगे।

अनोखे : नहीं, मैं बिलकुल ठीक बताऊँगा। और चोखेलाल तुम अपनी नाक इस मामले से बाहर रखो। चेयरमैन साहब आप मेहरबानी करके चोखेलाल को चुप कराइए।

चेयरमैन : ठीक है, ठीक है। लेकिन भगवान के लिए अब कुछ बको भी कि बात क्या है ?

अनोखे : अब देखिए जनाब हड़बड़ी मचाकर मेरे बयान को गड़बड़ मत कर दीजिएगा। मैं बारी-बारी से सारी बातें बताऊँगा। असल में मैं सब-कुछ सिलसिलेवार और कायदे से बताना चाहता हूँ। चेयरमैन साहब आपको याद है न जब हम लोग कुछ देर पहले आपके यहाँ थे ? यानी जब आप---

चेयरमैन : हाँ थे। अब आगे भी बको।

अनोखे : बता रहा हूँ, बता रहा हूँ---

चोखे : आपको याद होगा सर जब लोग यहाँ आए थे और आप चन्दू हज्जाम से बातें कर रहे थे---

चेयरमैन : हाँ-हाँ। आगे बोल---

चोखे : वही बात आगे बोलूँ ? चन्दू हज्जाम सरकारी जमीन पर अपनी दूकान खोलने के लिए आपको दो सौ रुपया दे रहा था और आप उससे पाँच सौ---

चेयरमैन : अबे चोप !

अनोखे : चोखेलाल तुम ग़लत किस्सा सुनाने लगे। अब तुम बीच में मत घुस पड़ना। मैं सुनाता हूँ। असल में हम लोग साधूसिंह को खोज रहे थे।

चोखे : साधूसिंह मिला नहीं, वहाँ चम्पालाल मिल गया।

अनोखे : चम्पालाल जगदम्बाप्रसाद के यहाँ से आ रहा था।

चोखे : जगदम्बाप्रसाद निहालचन्द का पड़ोसी है।

अनोखे : मैंने सोचा निहालचन्द मिला नहीं तो क्यों न उसके भाई मूलचन्द से मिल लूँ।

चोखे : ठहरो, ठहरो, ठहरो।

अनोखे : क्या हुआ ? तुम बीच में क्यों टपके ?

चोखे : मगर हमारा किस्सा पोपटलाल के होटल से शुरू हुआ था।

अनोखे : हाँ। पोपटलाल के होटल से। अब तुम बीच में मत टोकना। हाँ तो हमें भूख लग गई थी। हमने सोचा क्यों न पोपटलाल के होटल में चलकर एक-एक प्लेट कुछ खा लें।

चोखे : दरअस्ल हम लोग कुल्चे-छोले खाना चाहते थे।

अनोखे : अपना सिर खाना चाहते थे। कहानी मैं सुना रहा हूँ चोखेलाल, मैं !

हाकिम : ओ हो, तो बताओगे भी, आगे क्या हुआ ?

अनोखे : चोखेलाल अब बीच में मत टोकना। तो पोपटलाल के होटल के एक कोने की मेज़ छाँटकर हम लोग बैठ गए।

हमने बेयरा को बुलाकर कहा—बेयरा, एक-एक प्लेट कुल्चे-छोले लाओ।

चोखे : अचार के साथ।

अनोखे : अबे चोप! तभी मैंने देखा एक गोरा-चिट्टा नौजवान।

चोखे : भूरे रंग का सूट पहने हुए।

अनोखे : रोबीली मूछें—अन्दर के दरवाज़े से चलता हुआ आया और एक मेज पर बैठ गया। वो कुछ सोच रहा था। मैं एक नज़र में ही भाँप गया। मैंने चोखेलाल को इशारा किया—चोखेलाल उस आदमी को देख रहे हो?

चोखे : हाँ, देख रहा हूँ अनोखेलाल।

अनोखे : अबे अभी कहाँ देख रहा है। तूने यही बात वहाँ कही थी।

चोखे : हाँ, वहाँ कही थी।

अनोखे : मैंने देखा, वो आदमी हर चीज को घूर-घूरकर देख रहा है। खास तौर से हमारी मेज़ के कुल्चे-छोले तो बेहद गौर से देख रहा था। जरूर वह इस बात पर गौर कर रहा होगा कि पोपटलाल घटिया चीज़ों से माल तैयार करता है। मैंने बेयरे को बुलाकर पूछा—वो आदमी कौन है? बेयरे ने कहा—यह दिल्ली से आया हुआ कोई अफ़सर है।

हाकिम : अफ़सर?

हेडमास्टर : द-द-दिल्ली से आया हुआ?

चोखे : हाँ, दिल्ली से आया हुआ अफ़सर। मैंने भी यही सुना था।

अनोखे : कहानी मैं सुना रहा हूँ चोखेलाल। और जनाब, बेयरे ने बताया कि यह अफ़सर वहाँ दो हफ्ते से ठहरा हुआ था।

चेयरमैन : मारे गए। दो हफ़्ते से?

अनोखे : बस, मैं एकदम समझ गया। मैंने कहा—आहा, यही है।

चोखे : यह बात मैंने कही थी।

अनोखे : नहीं। तुमने बाद में कही थी।

चोखे : ठीक है, ठीक है। पहले तुमने कही फिर मैंने कही—यानी हम दोनों ने कही—आहा, तो यही है, वो यही है वो आला अफ़सर—

इन्स्पेक्टर : कौन?

अनोखे : अरे वही जिसके बारे में चेयरमैन साहब को खत मिला था।

चेयरमैन : हे भगवान, अब क्या होगा। वो यहाँ दो हफ्ते से है?

पोस्टमास्टर : तब तो हम लोगों के बारे में एक-एक बात उसे पता लग गई होगी।

हेडमास्टर : इसका मतलब है जब हाकिम साहब ने अपनी मुर्गियों के अंडों की सेल लगाई उस वक़्त वह यहीं था।

चेयरमैन : बाप रे, उसी दिन तो मैंने उस धोबन की पिटाई की थी। ज़रूर यह खबर आला अफ़सर तक पहुँच गई होगी। शहर की सड़कों पर महीनों से झाड़ू नहीं लगी है। हर चीज का कबाड़ा हुआ पड़ा है।

हाकिम : मान लीजिए हम सभी एक साथ सारे के सारे उनके पास होटल चलें—

चेयरमैन : जी नहीं। मैं खुद जाऊँगा। मैं ही कुछ करूँगा। अनोखे वह जवान है या बूढ़ा?

हेडमास्टर : या अ-अ-अधेड़।

हाकिम : या बच्चा—

अनोखे : जी नौजवान ही है। होगा कोई चौबीस-पच्चीस।

चेयरमैन : गनीमत है। तब तो मनाना कुछ आसान होगा। बस अब आप लोग फौरन यहाँ से भागिए और अपना-अपना महकमा सँभालिए।

इन्स्पेक्टर : हम लोगों को शामत ही आई समझो।

चेयरमैन : अरे कोई है?

नौकर : (आता है) जी साहब।

चेयरमैन : ड्राइवर को बोलो, गाड़ी निकाले।

नौकर : मगर साहब, गाड़ी पर तो मेमसाहब पिक्चर देखने गई हैं।
चेयरमैन : पिक्चर देखने ? अबे वो तो सरकारी गाड़ी है।
नौकर : मगर साहब वो तो मेमसाहब रोज ले जाती हैं।
चेयरमैन : मारे गए।
हाकिम : आला अफ़सर हुजूर ने यह भी देख लिया होगा। (**बाक़ी से**) अरे अब आप लोग यहाँ से जाइए न। यहाँ क्यों खड़े हैं ? (**लोग जाते हैं**) जा तू चेयरमैन साहब का कुर्ता ले आओ। (**नौकर अंदर जाता है**)
चेयरमैन : बाहर कान्स्टेबल होगा जरा उसे बुलाओ।
हाकिम : (**दरवाजे तक जाकर**) एई, सुनो, इधर आओ।

(**सिपाही अन्दर आता है। इसी वक़्त नौकर कुर्ते के बजाय पेटीकोट ले आता है। चेयरमैन हड़बड़ी में वही पहनता है। सिपाही हँसता है**)

चेयरमैन : (**गुस्से में पेटीकोट नौकर के गले में डालकर**) उल्लू का पट्ठा। (**सिपाही से**) और तू किसलिए हँस रहा है। अपनी वर्दी देखी है ? गेट आउट। (**सिपाही भागने लगता है**) ठहरो। बाहर कोई टैक्सी बुलाओ। जल्दी से।
सिपाही : अच्छा साहब। (**जाता है**)
चेयरमैन : मगर टोपी—कौनसी टोपी लगा जाऊं। अरे चोखेलाल केन्द्र में किस पार्टी की सरकार है ?
अनोखे : मूत पियो पार्टी की—
चोखे : अबे चुप। मोरार जी उल्टा लटकवा देगा। जनता पार्टी की सरकार है हुजूर।
चेयरमैन : जनता पार्टी की। जनता पार्टी की टोपी कौन-सी होगी।
चोखे : टोपी ?—सरकार कोई भी टोपी चलेगी बस सीधी मत लगाइए, थोड़ी आड़ी-तिरछी लगाइए।
चेयरमैन : ठीक है। (**नौकर से**) अबे कुर्ता नहीं मिला अभी ?
कोरस : (**कव्वाली**)

इन्हीं हाथों में सत्ता है इन्हीं हाथों में है शासन।

बड़ी मोटी है तोंद इनकी बड़ा ऊँचा है सिंहासन ॥
चलो हम हार बन जाएँ गले में इनके पड़ जाएँ।
बिछें हम फर्श पर इनके इन्हें हम सौंप दें जीवन ॥
पढ़े लिक्खों से कुछ सीखो जो हैं चालाक दुनिया में।
जहाँ मौका मिला घर जा के इनके माँजते बासन ॥
हमारी खाल की जूती इन्हीं के पाँव की रौनक।
हम अपनी हड्डियाँ घिसकर लगा आएँ इन्हें चन्दन ॥

चोखे : देख रहे हो अनोखेलाल।
अनोखे : देख रहा हूँ चोखेलाल।
चोखे : मछली
अनोखे : मछली
चोखे : छोटी मछली बड़ी मछली
अनोखे : और बड़ी मछली, और और बड़ी मछली।
कोरस : (**ठुमरी**)

भुजनिया भूजे बिना खा जाय।
बड़ी ने छोटी मछली निगली
बड़ी को और बड़ी है खाय
उसको और बड़ी ने खाया
बड़की और बड़ी ले जाय—
भुजनिया भूजे बिना खा जाय।

बहती नदी में धोते हाथ
घी में उँगली पाँचो साथ
बदल न पाए इनका राज
सेठ सिपाही नेता साथ
भुजनिया भूजे बिना खा जाय।

वही दरोगा वो ही चोर
चोर के घर में घुसा छिछोर
मौसेरा है बड़का चोर

मना के लाग्रो मचा है शोर
मुजनिया भूजे बिना खा जाय ।

रंगा : (दोहा)

अफ़सर क्या आया यहाँ भगदड़ दिया मचाय ।
चेयरमैन जी दौड़कर होटल पहुँचे जाय ॥

(बहरतवील)

एक होटल के कमरे में था वो टिका
और नौकर था मूजी सा इक साथ में ।
थी समस्या बड़ी आगे वो क्या करे
खाने पीने के पैसे न थे हाथ में ॥
बेयरे होटल के सारे थे मूजी बड़े
और मालिक था उससे भी ज्यादा कड़ा ।
खाना उस नौजवाँ का था रुकवा दिया
और धमकाया लग जाएगा हथकड़ा ।

(दोहा)

चलो दिखाएँ आपको, होटल का वो रूम ।
नौजवान नौकर लिए ठहरा जिसमें सूम ॥

खादिम : (बहरतवील)

हाय कैसी मिली ये मुझे नौकरी
साथ इस नौजवाँ के मैं भूखा मरूँ ।
बन्द होटल ने खाना किया आज से
कूद चूहे रहे पेट कैसे भरूँ ॥
तंग आया हूँ जी ऐसे मालिक से मैं
क्लर्क होकर भी जो करता आवारगी ।
टेंट में एक धेला न उसके बचा
होटलों में मजे काटने की लगी ॥
न उगलते बने न निगलते बने
इसके सँग इस तरह से फँसा हूँ यहाँ ।
जाने किस्मत मिली कैसी खोटी मुझे
गर निकाला गया जाऊँगा मैं कहाँ ॥

रंगा : बात सही है, सच यही है। मिनिस्टर हो, हाकिम हो, दरोगा हो मुफ्त खाए तो खा जाए। मगर ये दो कौड़ी के क्लर्क जब तक खाने का पैसा न दें खाना बन्द ।

खादिम : खाना बन्द । बाप रे । और हमारा ये मालिक भी अजीब खब्ती है। दो महीने से जाने कहाँ-कहाँ घुमा रहा है। जब देखो—खादिम एक उम्दा-सा होटल तो देखो एक लजीज़-सा डिनर तो बोलो, गर्मागर्म तरमाल वाला। अब भुगतो बेटा। पेशे से क्लर्क, नखरे राजकुमारों के—

रंगा : टके की गुड़िया चटाई का लहँगा !

खादिम : ऊपर से होटल मालिक ने कहलाया है कि वह जेल भिजवा देगा अगर पैसे नहीं दिए—हे भगवान, एक तो पेट में आग लग रही है ऊपर से जेल की चक्की **(दूर से खादिम की आवाज)** अरे, बाप रे, कौन आया—

बेवक्त : **(आता है । दोहा)**

क्यों भी मूजी तू यहाँ क्या करता है बैठ ।
आँतें मेरे पेट की रहीं भूख से ऐंठ ॥

(चौबोला)

रही भूख से ऐंठ यहाँ तू बैठा मौज उड़ाता है ।
कब आएगा काम न कोई तू तरकीब लड़ाता है ॥
मुर्ग दो प्याज़ा बिरियानी की खुशबू देग उड़ाता है ।
चटखारे मत ले बेयरे को कह साहब बुलवाता है ॥

(बेयरा आता है)

बेवक्त : अबे, बेयरे को पकड़ ।

खादिम : **(बेयरा से । दोहा)**

ओ बेयरा जी अरज भी सुन लें मेरी आप ।
मौके पर बतलाए हैं सभी गधे को बाप ॥

बेयरा : ऐं ? क्या कहा ?

खादिम : कुछ नहीं हुजूर, कुछ नहीं ।

(दौड़)
मुझे साहब ने भेजा
थाल भोजन के दे जा।
उधारी चुक जायेगी
हम लोगों पर तरस खाइए महामहिम श्री बेयरा जी ।।

बेयरा : (दोहा)
साफ़ बात सुन लीजिए खाना दिया न जाय।
मेरे मालिक ने हुकम ऐसा दिया सुनाय ।।
(बहरतवील)
गर उधारी चुकाई न कल तो सुनो
मेरे मालिक मिलेंगे चेयरमैन से।
जेल में बन्द कर देंगे फौरन तुम्हें
वाँ पे चक्की रहो पीसते चैन से ।।

खादिम : (दौड़)
मालिक मेरा झक्की
तुम पीसो बेटा चक्की ।।
घुटे सिर ओले खाओ
अपनी गंज: चाँद को नाखूनों से खुजलाओ ।।

देवदत्त : (भजन)
झलक दिखाकर कहाँ चले हो
ओ मेरे मालिक ओ मेरे बेयरा।
तरस तो खाओ उदर पे मेरे
सता रहे क्यों दिखा के चेहरा।
झलक दिखा के—
मुझे बचा लो ओ मेरे कृष्णा
ओ मेरे रामा ओ मेरे शंभू
बस एक थाली मुझे दिला दो
मैं बाँध दूंगा तुम्हारे सेहरा।
झलक दिखा के—

(बेयरा मुंह बिचकाकर जाता है)

रंगा : (दोहा)
बेयरे ने कुछ ना सुना चला गया मुंह फेर।
देवदत्त उसको रहा बार बार था टेर ।।
(चौबोला)
बार बार था टेर रहा दस्तक तब पड़ी सुनाई थी।
देखा नेता था एक खड़ा उसकी ज्यों शामत आई थी ।।
देवदत्त को देख कायदे से आदाब बजाई थी।
देवदत्त की मगर देख उसको तबियत घबराई थी ।।

(चेयरमैन देवदत्त के दरवाज़े पर दस्तक देता है और आदाब करता है)

चेयरमैन : (दोहा)
कहते इस नाचीज़ को चेयरमैन हैं लोग।
मुलाकात का आपसे कैसा है संयोग ।।

देवदत्त : (बहरतवील)
देख खादिम के बच्चे मुसीबत खड़ी
भागने का यहाँ कोई रस्ता नहीं।
जो शिकायत जा होटल के मालिक ने की
खुद चेयरमैन आ धमका है फौरन यहीं ।।

खादिम : (दोहा)
चलो जमूरे जेल की चक्की खाओ पीस।
चौबे से दूबे हुए बनने चले रईस ।।

देवदत्त : (झिझोटी)
झन झन झन झन बेड़ी बाजे
कैसे जाऊँ जल सजनवा।
बान बटत मोरे हाथ छिलत हैं
और रईसी पेल सजनवा।
झन झन झन झन—

चेयरमैन : (बहरतवील)

मैं चेयरमैन हूँ देखता हूँ सदा
मेरे कस्बे में किस किसको तकलीफ़ है।
है शिकायत तुरत मैंने सबकी सुनी
बस इसी से हुई मेरी तारीफ़ है॥
मुझको मालुम हुआ एक अरसे से हैं
'आप होटल में इसकी शिकायत भी है।
आपको ले चलूँगा मैं बेहतर जगह
इस शहर की कुछ ऐसी रवायत भी है॥

देवदत्त : (दोहा)

सुन खादिम बेहतर जगह से मतलब है जेल।
इससे अब बचना नहीं मुझे लग रहा खेल॥

(बहरतवील)

मैं करता भी क्या ओ चेयरमैन जी
आप मेरी जगह होते खुद देखते।
खाना घटिया मुसाफ़िर को देता है वो
जिसका होटल उसे क्यों न हैं टोकते॥
चाय में घोल जूते का ज्यों हो सड़ा
नान जैसे रबड़ का हो टुकड़ा कड़ा।
चावलों की ये देता है लुगदी बना
दाल बासी सदा मीट इसका सड़ा॥

चेयरमैन : (दोहा)

माफी मैं हूँ चाहता हुई अगर तकलीफ़।
मेरी गलती है नहीं बेहद आप शरीफ॥

(बहरतवील)

यां पे व्यापार ईमानदारी का है
मेरे चितपुर का है नेक दिल हर बशर।
मामले को जहाँ तक समझता हूँ मैं
आपको जाना होगा किसी और घर॥

देवदत्त : (दोहा)

बहुत शुक्रिया आपको मैं इस घर ही ठीक।
अफ़सर मैं खुद्दार हूँ मैं न माँगता भीख॥

(बहरतवील)

और मैं साफ कहता हूँ सुन लें जरा
बात मेरी करें हैसियत देखकर।
मैं हूँ अफ़सर मैं देखूँगा सुन लें, यहाँ
किस तरह कौन करता है अपनी बसर॥

चेयरमैन : (अपने साथियों से)

बाप रे, बड़े गुस्से में है। लगता है मेरे दुश्मनों ने मेरे खिलाफ़ इसके कान भरे हैं।

(दोहा)

बीवी बच्चों का करें कुछ मेरे भी ध्यान।
शायद गलती हो गई लोगों से अनजान॥

(चौबोला)

लोगों से अनजान सभी कमजोरी के पुतले हैं।
क्या मेरी तनख्वाह कहूँ क्या कैसे पेट पले है॥
करते हैं बदनाम मुफ्त सब मेरे पड़े गले हैं।
ये चरित्र हत्यारे मुझसे बेहद सभी जले हैं॥

(बहरतवील)

मैंने हरिजन लुगाई को पीटा नहीं
झूठ कहते हैं मैं टैक्स का चोर हूँ।
पारटी के लिए मैंने चन्दा लिया
मुझको लेकर गबन का गलत शोर यूँ॥

देवदत्त : (बहरतवील)

अजब चीज़ हैं आप बकबक किए
जा रहे हैं न मेरी भी कुछ सुन रहे।
अपने ईमाँ से करता हूँ मैं नौकरी
घूस लेता न मैं चाहे कोई कहे॥

चेयरमैन : मारे गए । अफ़सर बड़ा सख्त है । अबे, अब क्या करूँ ?
चोखे : पूजा ।
अनोखे : खूब बड़ी पूजा ।
चोखे : ज्यादा बड़ा बेईमान, ज्यादा बड़ी पूजा ।
देवदत्त : एँ, पूजा ?
कोरस : (भजन)

ओम जै आला अफ़सर
चमचों के दुख सारे
छिन में लेते हर ।
ओम जै आला अफ़सर ।।
सुख संपत घर आवै
बँगला हो मन का
चाल सफल हो जावे
कुर्सी पावे खर ।
ओम जै आला अफ़सर ।।
जेबों का जेबों से
गहरा है रिश्ता
जो लूटे सो खावे
हम सबसे मिलकर ।
ओम जै आला अफ़सर ।।
सेठ सिपाही अफ़सर
नेता से मिल जायें
कटे मजे से सबकी
जनता जाए मर ।
ओम जै आला अफ़सर ।।

(रुपये और मिठाई से भरी थाली चेयरमैन सामने करता है । देवदत्त ललचाकर मुँह फेरता है)

चेयरमैन : हुजूर लीजिए, स्वीकार कीजिए ।
देवदत्त : (थोड़ी-सी मिठाई लेकर) धन्यवाद ।

चेयरमैन : नहीं-नहीं, सारा लीजिए । आप तो तकल्लुफ़ करते हैं—
देवदत्त : (रुपये उठाकर) धन्यवाद जनाब । दरअस्ल यहाँ आकर मैंने कुछ ज्यादा ही खर्च कर दिया था । इसे मैं कर्ज समझूँगा । आप तशरीफ़ रखिए । (खादिम से) अबे खादिम, ये चक्कर क्या है ? कहीं ये मुझे फँसा तो नहीं रहा ।
चेयरमैन : मुझे अफसोस है आपको यहाँ तकलीफ़ हुई ।
देवदत्त : अरे कोई बात नहीं । बल्कि मुझे अफ़सोस है कि मुझे थोड़ा गुस्सा आ गया ।
चेयरमैन : शर्मिन्दा मत कीजिए जनाब । अगर बुरा न मानें तो मैं कहूँ । दरअस्ल दूसरे कस्बों के चेयरमैनों की तरह नहीं हूँ । अपने इलाके की हालत मैं खुद देखता रहता हूँ ।
देवदत्त : जी हाँ । खलीफ़ा हारूँ-अल-रशीद भी इसी तरह करते थे जनाब ।
चेयरमैन : आपकी जर्रानवाजी है । अभी-अभी मैं दौरे पर निकला तो मालूम हुआ आप जैसी महान हस्ती यहाँ ठहरी हुई है ।
देवदत्त : शर्मिन्दा न करें जनाब ।
चेयरमैन : आप अगर बुरा न मानें तो एक बात पूछूँ—अभी आप कब तक यहाँ तशरीफ़ रखेंगे ?
देवदत्त : कब तक ? जी ये मैं क्या कह सकता हूँ ।
चेयरमैन : (चोखे-अनोखे से) बाप रे, हाथ ही नहीं रखने देता । खैर । (देवदत्त से) हुजूर अगर आप बुरा न मानें तो एक बात कहूँ ।—मगर छोड़िए शायद आपको तकलीफ़ हो ।
देवदत्त : नहीं-नहीं, शौक से कहिए ।
चेयरमैन : देखिए, यहाँ रहने में तो आपको खासी तकलीफ़ होती होगी ।
देवदत्त : अजी कुछ मत पूछिए । एक तो मोमबत्ती जैसा बल्ब, ऊपर से भारी-भारी खटमल । जनाब कुत्तों की तरह

काटते हैं। कुत्तों की तरह।

चेयरमैन : तौबा-तौबा, ऐसे मुअज्जिज मेहमान को कुत्तों ने काटा। लानत है हम पर। जनाब अगर बुरा न मानें तो एक बात कहूँ—

देवदत्त : कहिए, कहिए।

चेयरमैन : आप बुरा न मानें तो मेरी कोठी के गेस्ट रूम में तशरीफ़ रखें। कमरा अच्छा सजा हुआ है। उसमें जनाब रोशनी भी है और खटमल भी नहीं हैं।

देवदत्त : ओ हो, यह तो मेरा सौभाग्य है। जनाब किसी परिवार में रहना तो खुशकिस्मती ही होती है।

चेयरमैन : मैं तो जानता हूँ। खूब जानता हूँ जनाब, होटल का खाना तो बस—

देवदत्त : अजी होटल का खाना? कुछ मत पूछिए साहब, मुझे लगता है यह शख्स रोगन जोश में मोमबत्ती डालता है और कबाब में लीद।

चेयरमैन : हे भगवान! देखिए जनाब इस लीद से मेरा कोई रिश्ता नहीं। जनाब अब आप इस घटिया से होटल को छोड़िए और मेरे साथ तशरीफ ले चलिए।

बेयरा : **(आता है)** मालिक ने बिल भिजवाया है।

देवदत्त : ऐं बिल? खादिम, बिल ले लो और रुपये इसे दे दो।

बेयरा : ऐं, रुपये? **(चेयरमैन को देखकर चौंकता है)** हुजूर आप—

चेयरमैन : ए, ये बिल वापस ले जाओ और अपने मालिक से कहना सुबह दफ्तर में हाजिर हो।

बेयरा : जो हुक्म हुजूर। **(जाता है)**

चेयरमैन : आपको तकलीफ़ तो होगी लेकिन हम चाहेंगे आप हमारे कस्बे की खास-खास चीजें जरूर देखें। जैसे हमारा स्कूल, हमारा अस्पताल।

देवदत्त : जी हाँ, जी हाँ। जरूर दिखाइए।

चेयरमैन : इससे हमारी हौसला अफ़जाई होगी, बल्कि इज्जत बढ़ेगी।

देवदत्त : शर्मिन्दा न करें जनाब।

चेयरमैन : हमारे यहाँ जनाब एक आदर्श जेल है और हवालात भी है।

देवदत्त : मारे गए। अबे खादिम—आ गया न असलियत पर।

खादिम : हुजूर—

चेयरमैन : और जनाब—

देवदत्त : जनाब देखिए फिलहाल हम स्कूल और अस्पताल ही देखकर काम चला लेंगे। ज-ज-जेल।

खादिम : फिर कभी।

देवदत्त : जी हाँ। फिर कभी।

चेयरमैन : जैसी आपकी मर्जी! **(खादिम से)** सुनो तुम साहब का सामान लेकर पहुँचो। **(देवदत्त से)** आला हजरत मेरे साथ मेरी गाड़ी पर चलना पसन्द करेंगे न? मेरा खयाल है आपको तकलीफ नहीं ही होगी—

देवदत्त : जी हाँ, जी हाँ। कोई बात नहीं। चलिए।

चेयरमैन : पहले आप।

देवदत्त : पहले आप।

चेयरमैन : पहले आप।

देवदत्त : पहले आप।

चेयरमैन : पहले आप।

देवदत्त : जैसी आपकी मर्जी **(चलता है)**

चेयरमैन : कमीना साला।

देवदत्त : जी?

चेयरमैन : कुछ नहीं, कुछ नहीं।

देवदत्त : हरामजादा।

चेयरमैन : जी?—जी शुक्रिया!

(दोनों जाते हैं)

रंगा : **(दोहा)**

चेयरमैन के घर चले आओ फिर इक बार।
आला अफ़सर के लिए स्वागत है तैयार॥
(चौबोला)
स्वागत है तैयार उछलती घर में माँ बेटी हैं।
सभी खड़े हैं चुस्त काम में सबके मुस्तैदी हैं॥
कच्ची बस्ती तोड़ सफ़ाई सब सड़कों की की है।
लीपा पोती खूब हिदायत सबको यही मिली है॥

कोरस : (तर्ज़ जंग)
साफ़ करो साफ़ करो
झुग्गियाँ साफ़ करो॥
देखो वो उस तरफ़
मैली सी बुढ़िया और
दुबले से बच्चे लिए
अंधा एक बैठा है
उसको कहीं कस्बे से
बाहर खदेड़ कर
साफ़ करो साफ़ करो
झुग्गियाँ साफ़ करो॥
कोई बेकार हो
कोई मजलूम हो
दामन पसार कर
रोता फरियाद कर
उनको मत माफ़ करो॥
साफ़ करो साफ़ करो
झुग्गियाँ साफ करो॥
साहब की शानदार
आ रही गाड़ी है
हाकिम अगाड़ी है
सिपाही पिछाड़ी है

दाएँ है पत्रकार
बाएँ बुद्धिजीवी है
साफ़ करो साफ़ करो
झुग्गियाँ साफ़ करो॥
सात लाख बाजूकाट
झालर लगाई है
तीन लाख मुंडों के
जलते कंदील है
आदमी की पसलियाँ
ताम बने फाटक हैं
साफ़ करो साफ़ करो
झुग्गियाँ साफ़ करो॥

(चेयरमैन का घर)

श्रीमती : अरे मुण्डू, ओ मुण्डू। हद हो गई। कहाँ मर गया?

मुण्डू : जी मेम साहब।

श्रीमती : देख अभी तक घर की सफाई भी नहीं हुई। तू बिल्कुल निकम्मा है।

मुण्डू : जी मेम साहब।

श्रीमती : शटप।

चंचल : (तेजी से आती है) मम्मी—

श्रीमती : ओ हो, अब क्या मुसीबत आ गई। तेरे पीछे तो नाक में दम हो गया है। इधर से आई, मम्मी, मेरी साड़ी ठीक है। उधर से आई, मम्मी, मेरे बाल ठीक हैं? हद ही हो गई। तेरे झंझटों में मैंने अपनी भौंहें भी ठीक नहीं कीं।

चंचल : हाए मम्मी वो आएँगे कब?

श्रीमती : भाड़ में जा तू!

चंचल : पता नहीं उनको हरा रंग पसन्द है या जामनी।

श्रीमती : इसकी फ़िक्र तू क्यों कर रही है? तुझे उनकी पसन्द से क्या? मैं जानती हूँ उन्हें नारंगी रंग पसन्द होगा।

दिल्ली की सरकार के ओहदेदारों को नारंगी रंग ही पसन्द है।

चंचल : ममी जल्दी खिड़की से देखो, कोई आ रहा है—बड़ी तेजी से इधर ही आ रहा है।

श्रीमती : (**देखकर**) अरी हट। वो क्या पैदल आएंगे ? ये तो चोखे हैं। मगर इधर ही आ रहा है। जरूर कोई खबर ला रहा होगा।

चंचल : हाय इसका मतलब है वो अब आ ही रहे होंगे।

श्रीमती : वो ?

चंचल : मम्मी !

श्रीमती : तुझे इतना इन्टरेस्ट लेने की ज़रूरत नहीं है, समझी। और एक बात बता दूं, आला अफ़सर के सामने तू बार-बार आई गई तो यह बेतहज़ीबी होगी। जब तुझे बुलाया जाय तभी आना और जो कुछ पूछा जाय सिर्फ़ उसी का जवाब देना। उसके बाद फौरन अन्दर चली जाना। हाँ, यह भी समझ लो, वो बेहद मसरूफ़ हाकिम हैं उनसे अपना जैक लेमन और प्रीस्टले मत छेड़ देना—

चोखे : (**हाँफता हुआ आता है**) बाप रे। हाँफ गया।

श्रीमती : क्या वो आ रहे हैं ?

चोखे : जनाब बस आने ही वाले हैं। अफसर बहुत सख्त हैं लेकिन साहब ने उन्हें मना ही लिया।

चंचल : चोखे उन्होंने शर्ट किस रंग की पहन रखी है ?

चोखे : नीली।

चंचल : हाए स्काई ब्लू मुझे कितना अच्छा लगता है।

श्रीमती : शटप। वो स्काई ब्लू हर्गिज़ नहीं पहनेंगे। उनकी कमीज़ रायल ब्लू है न चोखे ?

चोखे : जी ?

श्रीमती : रायल ब्लू !

चोखे : जी हाँ, जी हाँ। रायल ब्लू।

चंचल : हाय मम्मी, कैसा देहाती रंग है रायल ब्लू।

श्रीमती : और पैण्ट किस रंग की पहनी है ?

चोखे : पैण्ट ?

चंचल : पैण्ट ग्रे होगी।

श्रीमती : ग्रे ? नानसेन्स। मैं जानती हूँ उन्होंने गहरी लाल पैण्ट पहनी होगी।

चंचल : हाय मम्मी ! तुम्हें पता है तुमने उन्हें कैसे कपड़े पहना दिए ? माई गाड !

श्रीमती : एक बात बताओ चोखे, ये पता लगा वो हैं क्या ? मतलब उनका पद क्या है ?

चंचल : वो डायरेक्टर तो होंगे ही।

श्रीमती : डायरेक्टर तो उनका कुत्ता होगा। वो तो डारेक्टर जनरल होंगे। क्यों न चोखेलाल ?

चोखे : वो हवलदार जनरल हैं।

श्रीमती : शटप। हवलदार जनरल भी कोई पद होता है ?

चोखे : तब शायद पोस्टमास्टर जनरल होंगे। कुछ भी हो, हैं कोई न कोई जनरल ही। बाप रे क्या रोब है !

श्रीमती : हैं तो वही अफ़सर न जिनके बारे में साहब के पास खत आया था ?

चंचल : चोखे पहले ये बताओ वहाँ हुआ क्या ?

चोखे : भगवान का शुक्र है बात बन ही गई। पहले तो वो बेहद नाराज़ हुआ। साहब तो काँपने ही लगे।

श्रीमती : सचमुच नहीं काँप रहे होंगे। दिखा रहे होंगे।

चोखे : होटल मालिक के बर्ताव पर तो वो आग बगूला हो रहा था। फिर जब उसे पता लगा कि चेयरमैन साहब का इसमें कोई क़सूर नहीं है तब थोड़ा शान्त हुआ।

चंचल : चोखे, वो अधेड़ हैं या जवान ?

श्रीमती : इससे तुम्हें क्या ? (**चोखे से**) साहब की उम्र क्या होगी ?

चोखे : यही कोई पच्चीस-छब्बीस बरस।

चंचल : आई० ए० एस० होंगे।

चोखे : मगर साहब बातचीत में क्या सलीका और क्या शान है!

चंचल : हाय!

चोखे : ऐसे शान से बातचीत करता है कि बस सुनते ही रहो। —जी शुक्रिया, जी माफी चाहता हूँ, जी ज़र्रानवाज़ी है, जी तशरीफ़ रखिए।—ऐसे बोलता है। पढ़ने-लिखने का बेहद शौक़ है। कह रहा था—यहाँ कमरे में अँधेरा होता है, इसलिए पढ़ना-लिखना नहीं हो पाता।

चंचल : वो गोरे हैं या साँवले?

चोखे : बीच का रंग है। न गोरा है न साँवला।

श्रीमती : हाय। वण्डर फुल। मुझे काले आदमी बिल्कुल पसन्द नहीं हैं और गोरा आदमी तो छिला हुआ अंडा लगता है। बीच का रंग मुझे बहुत पसन्द है। अच्छा अब मैं जल्दी से तैयार होती हूँ। वो आ ही रहे होंगे।

चोखे : मैं अभी देखकर बताता हूँ वो लोग कहाँ तक पहुँचे।

(तीनों जाते हैं। इसी बीच मुण्डू के साथ खादिम आता है)

खादिम : **(सिर पर बिस्तर वगैरह लादे हुए)** ये कहाँ रखूं?

मुण्डू : उधर। उस कमरे में।

खादिम : ज़रा ठहरो। दम ले लूं। सामान काफ़ी भारी है।

मुण्डू : हमारे मालिक तो कहो, बाल बाल बचे।

खादिम : ऐं? हाँ। हाँ। अच्छा सुनो भाई, तुम तो अच्छे आदमी मालूम होते हो। मेरे लिए कुछ खाने को ला सकते हो?

मुण्डू : अभी तो खाना तैयार हुआ नहीं है। आज तो बेहतरीन खाना तैयार हो रहा है। लेकिन पहले जनरल साहब को खिलाया जायगा, बाद में बचने पर तुम्हें। लेकिन खाना बेहतरीन होगा।

खादिम : हाँ बेशक। बेशक। मगर तुम्हारे पास कुछ न कुछ तो

पड़ा होगा खाने लायक।

मुण्डू : देखता हूँ। मेरा खयाल है मूलियाँ होंगी।

खादिम : वही चलेगी। मूली चलेगी। फिर तीन-चार ले आना। चलो ज़रा बक्से में हाथ लगाओ। अन्दर रख आते हैं।

(दोनों बक्से सहित अन्दर जाते हैं। देवदत्त और उसके साथ चेयरमैन और हाकिम आदि आते हैं। देवदत्त थोड़ा नशे में है)

देवदत्त : बहुत खूब। बहुत खूब। हर चीज़ उम्दा, कस्बे का हर विभाग बेहतरीन। और हर जगह दिखाने का आपका तरीका लाजवाब है। फिर मेहमाननवाज़ी! मुझे तो यह सब याद रहेगा।

चेयरमैन : अब जनाब आपने देख लिया होगा। दूसरे चेयरमैनों की तरह मैं कतई नहीं हूँ। वो लोग तो सिर्फ़ अपना स्वार्थ साधते रहते हैं। हमारी आदत है अपने कर्तव्य को पूरा करना और हर कीमत पर जनता की सेवा करना। जनता की सेवा इसी निष्ठा और लगन से करते हुए मुझे पन्द्रह साल हो गए हैं, जी हाँ पन्द्रह साल।

देवदत्त : बेशक, बेशक। आप लोगों ने लंच बेहद लज़ीज़ खिलाया। मैं माफ़ी चाहता हूँ कि खाने के मामले में मैं ज़रा अपनी पसन्द का ख़याल रखता हूँ। हम लोगों ने स्कूल में लंच किया था न?

हेडमास्टर : ज-ज-ज-जी हाँ मेरे स्कूल में। म-म-मैं उसी के बारे में कुछ अर्ज़ करना चाहता था।

चेयरमैन : बाद में।

देवदत्त : और अस्पताल। वाह। क्या साफ़-सुथरा अस्पताल था और बिस्तर कितने अच्छे थे। कम्बल तो—

चेयरमैन : जी हाँ। हम उन्हें रोज़ धुलवाते हैं। और जनाब सच तो यह है कि ज़्यादातर लोग इतने आरामदेह अस्पताल का मज़ा लेने के लिए ही बीमार पड़ जाते हैं।

देवदत्त : आप कितनी बार बीमार पड़ते हैं ?

चेयरमैन : ऐं ? हें हें—जी आपके सेन्स आफ़ ह्यूमर का जवाब नहीं—वैसे सर आपको बताऊँ मैंने अपनी जिन्दगी का एक-एक मिनट जनता की सेवा में बिताया है। कभी-कभी तो मुश्किल से आधा घण्टा कुर्सी पर बैठे-बैठे ही सो जाता हूँ—मैं तो बल्कि अपने कर्तव्य और जनता की सेवा को ही भगवान की पूजा मानता हूँ। आप विश्वास कीजिए, जनाब एक बार एक ज्योतिषी यहाँ आया था। बहुत पहुँचा हुआ ज्योतिषी। मैं हुजूर को भी उससे मिलवाऊँगा। एक मिनट में बता देगा कि कौन आपका दुश्मन है और आपके खिलाफ़ क्या अनुष्ठान करा रहा है। आपको उसकी काट भी बता देगा। तो मैं कह रहा था—जनाब उस ज्योतिषी ने बताया, भविष्य में मुझे जनता की सेवा के और ज़्यादा अवसर मिलेंगे। कुछ नेता लोग तो बस अपने राज में यकीन मानिए तेन्दू की पत्तियाँ तक बेच खाते हैं। मगर मैंने ईश्वर साक्षी है, जनता का काम ईमानदारी और नेकनीयती से किया है। वैसे साहब देखिए, मुझे इस बात की कभी चिन्ता नहीं रही कि चुनावों में मैंने जो लाखों रुपए खर्च किये वे मुझे वापस मिलते हैं या नहीं। वो तो मैं समझता हूँ जनता की सेवा के लिए जनता पर न्योछावर कर दिए। अपनी सेवाएँ भी मैं निस्वार्थ समर्पित करता हूँ। मैंने यह भी कभी नहीं चाहा कि मुझे मेरी सेवाओं के बदले एक मुट्ठी राख भी दे दी जाय। यकीन मानिए सर !

कोरस : झूठा।
चापलूस।
बेईमान।
मक्कार।
परले दर्जे का काइयाँ और चालाक।

लोमड़ी की तरह धूर्त !

(दोहा)

झूठ रहा है बोल ये, चेयरमैन सरकार।
बदमाशों की मण्डली का ये है सरदार॥

(बहरतवील)

हम सभी की लड़ाई के दुश्मन हैं ये
जीना मुश्किल-हुआ हम सभी का यहाँ।
आओ पहचान लें इनके चेहरे नए
जिनसे खतरे में है सबका दीनो जहाँ॥

(कव्वाली)

कलेजा थामकर सुन लो बड़ी है दास्ताँ इनकी।
निकलता काम हो इनका पिदर मानेंगे खर को भी॥
चुनावों के दिनों में ये चले आएँगे सिर के बल।
करेंगे आपसे वादे, मिलेंगे आपको कम्बल।
जहाँ गद्दी मिली इनको हुई इनकी जुबाँ दुहरी॥
कलेजा थामकर सुन लो—

नज़र लोगों की लग जाए न, पहरे में निकलते हैं
जुबाँ कोई न खुल पाए, लिए कोड़े निकलते हैं
छुपाकर भी न कोई कर सके करनी बयाँ इनकी॥
कलेजा थामकर सुन लो—

सड़क बेरोजगारों के पसीने से हुई गीली।
उतरते रात हर घर में सुलगतीं लकड़ियाँ गीली।
सुलाकर अपने बच्चे देखतीं अन्धेर माँ जिनकी॥
कलेजा थामकर सुन लो—

गरीबी पर करें भाषण, उठाते हैं कसम सबकी।
गरीबों का कलेजा तल के खा जाएँ ना काँपे जी।
लगा दो जोर का नारा निकल जाएगी जाँ इनकी॥
कलेजा थामकर सुन लो—

चेयरमैन : जनाब मैं अर्ज करूँ—यहाँ आपको हर कमरे में रोशनी

मिलेगी। वैसे तो जनाब देखिए, बिजली की बहुत कमी है। और जनाब हालत तो ये हो गई है कि झुग्गी-झोपड़ियों वाले भी माँग करते हैं कि उन्हें बिजली चाहिए। यहाँ तक कि गाँवों में भी बिजली की माँग होती है। अब आप सोचिए, गाँव वालों का दिमाग़ खराब हुआ है या नहीं। कहाँ सरसों के तेल के सुन्दर-सुन्दर दीये जलते थे गाँवों में—अब कम्बख़्त बिजली चाहिए। इसीलिए कभी-कभी बत्ती चली जाती है। वैसे आप आराम से पढ़-लिख सकते हैं।

देवदत्त : हाँ पढ़ना-लिखना। मुझे पढ़ने-लिखने का बेहद शौक है। फिलासफ़ी पोएट्री—जी हाँ कविता तो मुझे बेहद पसन्द है। मैंने खुद भी कविताएँ लिखी हैं।

चेयरमैन : वाह वाह। कमाल है।

सभी : कमाल है।

कोरस : अगर अफ़सर बड़ा हो
हर काम उसका कमाल है
हाथ में उसके गुलाब कहो
भले लिए गोभी खड़ा हो !

(श्रीमती और चंचल आती हैं)

चेयरमैन : माफ़ी चाहता हूँ हुजूर मैं ताअर्रुफ़ करा दूँ—ये हैं हमारे आला अफ़सर दिल्ली से तशरीफ़ लाए हैं और ये हैं मेरी पत्नी—और ये मेरी बेटी चंचल।

देवदत्त : मेरा सौभाग्य है कि आप लोगों से मुलाकात हुई।

श्रीमती : जी, मेरा ज्यादा बड़ा सौभाग्य है। मुझे बेहद खुशी हो रही है कि इतनी महान हस्ती की मेहमानवाजी का मुझे मौका मिला।

देवदत्त : नहीं मैडम, मुझे और ज्यादा खुशी हो रही है।

श्रीमती : ये तो आपकी उदारता है। वरना मैं तो सोचती हूँ दिल्ली जैसे बेहतरीन शहर से इस कस्बे में आकर आपको खासी

तकलीफ़ उठानी पड़ी होगी। यहाँ तो आपका मन भी नहीं लगेगा।

देवदत्त : आप सही कहती हैं।

(दोहा)
दिल्ली की मैं क्या कहूँ, गहमा गहमी और।
हर दिन का फ़ैशन नया, रंगीनी हर ठौर॥

(बहरतवील)
सभी दिन मैं रहता हूँ कितना बिजी
इसका कैसे बयाँ मैं यहाँ पे करूँ।
हो मुलाकात मंत्री से हर दोपहर
शाम को मश्विरे अफ़सरों से करूँ॥
फिर रईसों से मेरी मुलाकात हो
क्लब को फिर रात होते ही जाना हुआ।
फिर डिनर के लिए तै किसी से हुआ
जो हो दुनिया में भी खूब माना हुआ॥

श्रीमती : (दोहा)
कहती रहती थी तभी मैं इनसे चिल्लाय।
इस कस्बे से बोर हूँ दिल्ली दो दिखलाय॥

(बहरतवील)
दिल्ली दो दिखलाए मुझे भी मन मेरा ललचाया है।
सुनती हूँ मैं रोज वहाँ गोरी चमड़ी की माया है॥
अँगरेजी हर ओर साहबी ठाठ मुझे भी भाया है।
महामोक्ष वो पाय जिसे दिल्ली में मरना आया है॥

देवदत्त : (दोहा)
बहुत शुक्रिया कर रहीं दिल्ली की तारीफ़।
मैं ले जाऊँ आपको जरा न हो तकलीफ़॥

(बहरतवील)
आप मुझ पर यकीं कर सकेंगी अगर
आप भी खूब दिल्ली में जाएंगी जम।

और मैं तो कहूँगा चयरमैन जी,
आप संसद में आ जायँ तो भी है कम ॥

चंचल : (दोहा)
मम्मी से ज्यादा मुझे है दिल्ली का चाव ।
यहाँ ठेलकर भी चले नहीं रेत में नाव ॥
(बहरतेवील)
कोई पिक्चर नई देख पाती न मैं
जाहिलों की यहाँ पे है भरमार सी ।
बोर होती हूँ मैं देख लें आप भी,
तेल हैं बेचते जो पढ़े फारसी ॥

श्रीमती : (दोहा)
चंचल मैं हूँ सोचती, साहब होंगे बोर ।
कहाँ मर गए हैं सभी कलाकार लतखोर ॥
(दौड़)
जरा कुछ नाच दिखाएँ
गीत या कविता गाएँ
और ईनाम कमाएँ
कहाँ गए फनकार तुरत हाजिर हो जाएँ ।

चोखे : मैं गाऊँ हुजूर ?
अनोखे : तुझे क्या शऊर ? मैं गाऊँ हुजूर ?
चोखे : मैं रेडियो कलाकार हूँ ।
अनोखे : मैं रेडियो का नाटककार हूँ । मैं ढोल बजाऊँ हुजूर ?
चोखे : पोल दिख जायगी ।
कोरस : तुम्हारी या व्यवस्था की ?
अनोखे : हट ! मैं गाऊँगा ।
चोखे : मैं तुझसे ज्यादा जोर से गाऊँगा ।
अनोखे : मैंने एमर्जेन्सी में बहुत गाया था—
कोरस : और आज भी गा ही रहा है ।
चोखे : चलो मैं हारा । तुम्हीं गाओ ।

अनोखे : चाँद सा कोई चेहरा जो पहलू में हो (**भूल जाता है**)
चाँद सा कोई चेहरा जो पहलू में हो (**याद नहीं आता**)
चोखे : इससे आगे हमें नहीं आता ।
दोनों : चाँद सा कोई चेहरा जो पहलू में हो
इससे आगे हमें नहीं आता । चाँद सा—
चोखे : अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो
अस्सी नब्बे पूरे सौ
सौ में लागा धागा
चोर निकल के भागा ।
कोरस : चाँद सा कोई चेहरा जो पहलू में हो
इससे आगे हमें नहीं आता । चाँद सा—
चोखे : बा बा ब्लैकशीप हैव यू ऐनी वूल ।
यस्सर यस्सर थ्री बैग्स फुल ।
वन फार माई मास्टर वनफार माई डेम
वन फार माई लिटिल ब्वाय दैट लिटस डाउन द लेन ।
कोरस : चाँद सा कोई चेहरा जो पहलू में हो
इससे आगे हमें नहीं आता । चाँद सा—
अनोखे : आओ लल्लू बिल्लू कालू
हाँडी में पकवाओ रतालू
साहब खड़ा नचाए भालू
कलाकन्द में छोड़े आलू ।
अक्लमन्द के दौड़े घोड़े
सभी मसाले थोड़े थोड़े
समझदार खिचड़ी में छोड़े
मूरख देखे नाक सिकोड़े ।
कोरस : चाँद सा कोई चेहरा जो पहलू में हो
इससे आगे मुझे नहीं आता । चाँद सा—
चोखे : चमचे की बीवी चमकीली
पैण्ट हो रही उसकी ढीली

बेटी उसकी छैल छबील।
बेपेंदी की चढ़ी पतीली।
देखो, देखो, देखो भाई
बड़े घरों की झाँकी आई
जूते की टोपी बनवाई
छोटा हुआ बड़े का भाई।

कोरस : चाँद सा कोई चेहरा जो पहलू में हो
इसके आगे हमें नहीं आता। चाँद सा—
(सबकी तालियाँ)

रंगा : (दोहा)
हाकिम की आमद हुई चेयरमैन के द्वार।
यार बड़ा अफ़सर हुआ, होती मौज बहार॥
(बहरतवील)
घर पे ठहरा कि अफ़सर को खुश हो गए
डर था जिसका चेयरमैन को वो पटा।
सिर्फ़ इतनी सी थी अब ज़रूरत रही
कर शिकायत न दे कोई मूज़ी छटा॥
हाल बाकी का करता हूँ अब मैं बयाँ
और होता है क्या आगे अब देखिए।
आला अफ़सर के धोके में आया है जो
काम करता है कैसा अजब देखिए॥
आला अफ़सर था घर में पड़ा सो रहा।
लोग घर पर वहाँ सारे खामोश थे॥
आला अफ़सर को तकलीफ़ हो ना कहीं
डर के मारे सभी के उड़े होश थे॥

चेयरमैन : (ताली बजाता है। चौकीदार आता है, धमधम करता हुआ)
(बहरतवील)
शोरो गुल कोई बिल्कुल यहाँ ना करे

नींद साहब की तोड़ेगा तू इस तरह।
मिस्ल घोड़े के तू है यहाँ चल रहा
मैंने इस बार दे दी तुझे है तरह॥
(दोहा)
क्या करता था तू वहाँ बाहर भाँग चढ़ाय।
क्या ड्यूटी तुझको मिली मुझको दे बतलाय॥

चौकीदार : दरवाज़े पर मुस्तैदी से खड़े रहने की।

चेयरमैन : अब धीरे से नहीं बोल सकता ?
(दोहा)
साफ़ बात कहता तुझे सुन ले कान लगाय।
जनता साहब से यहाँ ज़रा न मिलने पाय॥
(चौबोला)
ज़रा न मिलने पाय जानता हूँ मैं मूज़ी लोगों को।
मौका गर मिल जाय अर्जियाँ लेकर चढ़ आएँगे वो॥
करने को फरियाद चले आएँगे लेकर दुखड़े को।
दुनिया भर के झूठ गढ़ेंगे मेरे सारे दुश्मन जो॥
(बहरतवील)
और रखना ज़रा ध्यान धोबन कहीं
रोना हरिजन का ले आ न धमके यहाँ।
नंगा भूखा न कोई दिखाई पड़े
आला साहब से खोले न अपनी ज़बाँ॥

चौकीदार : (बहरतवील)
हुक्म पूरा करूँगा मैं मुस्तैद हो
अपनी ड्यूटी को मैं जानता खूब हूँ।
कोई मूज़ी यहाँ गरचे आ ही गया
अपने डंडे से उसकी खबर खूब लूँ॥
(दोनों चुपचाप जाते हैं)

कोरस : हम इधर हैं उधर राजा जी का महल
बीच में एक ऊँची सी दीवार है।

पसलियों की खुली खिड़कियों से इधर
झाँकता गमजदा चाँद सहमा हुआ
उस तरफ़ बज रहे साज सुर में मिले
बीच में खौफ़ की एक दीवार है।।
हम इधर हैं—

हम हजारों बरस से यहीं हैं खड़े
धूल में आधे आधे रहे हैं गड़े
राजा रानी उधर लेते अँगड़ाइयाँ
बीच में सख्त पहरे की दीवार है।
हम इधर हैं—

बाँध लो बाँध लो भूख की मुट्ठियाँ
फ़ैसल जुल्म का आओ कर ले यहाँ।
जोश अपना इधर जुल्म उनका उधर
बीच में उनकी बन्दूक तैयार है।
हम इधर हैं—

(हाकिम, हेडमास्टर, पोस्टमास्टर, इन्स्पेक्टर, चोखे, अनोखे चुपचाप आते हैं)

हाकिम : (कतार से खड़ा करके) ईश्वर के लिए आप लोग कुछ तो कायदे से खड़े होइए। एक अच्छी कतार भी आप नहीं लगा सकते ? याद रखिए आला अफ़सर के सामने हमें ऐसे अनुशासन से रहना है जैसे सिपाही उन्हें गार्ड आफ़ आनर दे रहे हों।

इन्स्पेक्टर : लेकिन एक बात बताइए, हम लोगों को कुछ भेंट वगैरह भी तो तैयार रखनी चाहिए।

हाकिम : क्या मतलब ?

इन्स्पेक्टर : मेरा मतलब है—(**रुपयों का इशारा**)

हाकिम : मतलब चुपचाप आला अफ़सर के हाथों में रख दें।

इन्स्पेक्टर : जी हाँ।

हाकिम : खुलेआम देना तो खतरे का काम है।

(**दोहा**)
करो काम कुछ इस तरह शक उसको ना होय।
ऐसा ना हो बाद में रहें सभी हम रोय।।
(**चौबोला**)
रहें सभी हम रोय एक मुझको तरकीब सुहाती है।
हम उसको बोलें गाँवों में ही बाढ़ हमेशा आती है।।
सब बाढ़ पीड़ितों का चन्दा ले करके दुनिया खाती है।
चन्दे की थैली भेंट करें तरकीब मुझे यह भाती है।।

हेडमास्टर : (बहरतवील)
च-च-चन्दे की तरकीब सोची भली
जा के जनता से हम सब वसूली करें।
ज-ज-जादा से जादा इकट्ठा हो धन
थ-थ-थोड़ी सी अपनी भी जेबें भरें।।

इन्स्पेक्टर : (दोहा)
आला अफ़सर से कहें, थैली ले लें आप।
रपट भली सी सभी की, लिख दें माई बाप।।
(बहरतवील)
चेयरमैन चितपुर का चालाक है
उसने अफ़सर को अपने पटा ही लिया।
अपने बारे में अच्छी रपट लेगा ये,
जाँच अपने करप्शन की बचवा दिया।।

पोस्टमास्टर : (बहरतवील)
कान हम सबके बारे में होंगे भरे
आला अफ़सर से हम सबको मरवाएगा।
खैर है अब इसी में कि हम भी मिले
चारा बंसी में हो माछ फंस जायगा।।

हाकिम : (दोहा)
अच्छा यह तो तय करो कौन करेगा बात।

कोरस : अफसर की जो खा सके सबसे पहले लात।।

इन्स्पेक्टर : (दौड़)
आप ही उसे पटाएँ।
रहें हम दाएँ बाएँ।
आप हाकिम चितपुर के।
आप हैं हम सबसे चालाक खान हैं सारे गुर के ॥

देवदत्त : (खाँस कर, आफ़ स्टेज) खादिम !

सभी : अबे मर गए ! (सहसा सभी भागकर चले जाते हैं)

देवदत्त : (दोहा)
खादिम मुझको आ गई कैसी गहरी नींद।
(खादिम आता है)
मजा आ रहा फिटकरी और न लगती हींग ॥
(बहरतवील)
लंच उम्दा मिला, नाश्ता खूब था
और सोने को बिस्तर मुलायम मिला।
है चेयरमैन की बीवी बेटी हसीं
हो गया है मेरा इश्क का सिलसिला ॥

हाकिम : (दोहा)
मैं हाकिम हूँ यहाँ का काम करूँ भरपूर।
लाएँ अपनी जूतियाँ कर दूँ साफ़ हुजूर ॥
(चौबोला)
कर दूँ साफ़ हुजूर काम ही मेरा सेवा करना है।
चितपुर के कस्बे का हाकिम मुझे बदी से डरना है ॥
मुझे नहीं औरों की जैसी अपनी जेबें भरना है।
नेकी मेरा कौल एक दिन आखिर मुझको मरना है ॥

देवदत्त : (दोहा)
ओहो हाकिम आप हैं, बड़ी खुशी की बात।
होती होगी आप पर पैसे की बरसात ॥

हाकिम : (दोहा)
जी हाँ, जी हाँ अरे नहीं करूँ न ऐसा पाप।

(स्वगत) शायद उघड़ा भेद है, अरे बाप रे बाप ॥
(बहरतवील)
मैंने मेहनत से अपनी किया काम है।
मुझसे कोई शिकायत किसी को नहीं
काम की मेरे तारीफ़ करते हैं सब
घूस लेता न मैं और न देता कहीं ॥
(मुट्ठी आगे करता है)

देवदत्त : (दौड़)
छुपा है मुट्ठी में क्या ?

हाकिम : (मुट्ठी से रुपए गिराता है)
नहीं इसमें कुछ भी था।

देवदत्त : नोट ये बिखरे कैसे
जैसे भी हों नोट कर्ज मानूँगा मैं ये पैसे।

हाकिम : (बहरतवील)
आपका हुक्म हो खास मुझको कहें।

देवदत्त : खास हो हुक्म ? मतलब है क्या आपका ?

हाकिम : मेरा मतलब है मेरे लिए कुछ कहें।

देवदत्त : काम देखा यहाँ ठीक है आपका।

हाकिम : धन्यवाद। (जाता है)

पोस्टमास्टर : हुजूर खादिम मिलने की इजाजत चाहता है।

देवदत्त : आपकी तारीफ़।

पोस्टमास्टर : (दोहा)
पोस्टमास्टर मैं यहाँ कहलाता नाचीज।
सोच रहा हूँ आपसे कुछ मिल जाय तमीज़ ॥

देवदत्त : (दोहा)
मैंने कुछ सुना है यहाँ आपका नाम।
लोग बताते हैं मुझे, खास आपका काम ॥

पोस्टमास्टर : (बहरतवील)
अरे बाप रे मर गया मैं तो हूँ

कान हाकिम ने हैं आपके भर दिए।
घूसखोरी में है खुद वो माहिर बड़ा
नाम चितपुर का बदनाम उसके लिए॥

देवदत्त : ठीक है आपकी बात मुझको लगी
नाम ईमानदारों में है आपका।
आप लाए लिफ़ाफे में क्या अर्ज़ियाँ
दें मुझे मैं करूँ काम इंसाफ़ का।

(पोस्टमास्टर नोट देकर भागता है)

(इन्स्पेक्टर आता है)

(दोहा)
कहिए कैसे आप हैं आए थानेदार।
सुनता हूँ मैं आपकी चर्चा बारंबार॥

इन्स्पेक्टर : (स्वगत। बहरतवील)
या खुदा ये तो हमले को तैयार है
इसको मेरे गुनों का पता लग गया।
गर किया कुछ न फौरन तो है मौत ही
जाँच से ऐसी पाला पड़ा है नया॥

(दौड़)
माफ़ मुझको कर दीजे
मेरी रोजी ना लीजे
आपको खुश कर दूँगा
सब के सब मक्कार भेद सबका ही दूँगा।

देवदत्त : (बहरतवील)
बात ऐसी है कुछ मैं भी किससे कहूँ
इस जगह आके कुछ खर्च ज़्यादा हुआ।
कर्ज़ ले लूंगा मैं आप गर दे सकें
वरना पैसा किसी का न मैंने छुआ॥

कोरस : (दोहा)
बड़े माल की लूट है, लूट सके सो लूट।

सत्ता जैसे ही गई, माल जायेंगे छूट॥

(बहरतवील)
बारी बारी से सारे चले आ रहे
एक को दूसरे पे है शक हो गया।
भाँग सारे कुएँ में पड़ी है यहाँ
आएगी न किसी को किसी से हया॥

मैं लाया मज़ेदार
बाबू चना जोर गरम।
ये हैं हैडमास्टर आला
इनका ढंग है बड़ा निराला
इनकी शिक्षा की दूकान
काट लें अभी आपके कान

(रुपए देकर हेडमास्टर धीरे-धीरे जाता है)

जिनके नोट जेब के अन्दर
वो बढ़वा लाते हैं नम्बर
बाबू चना जोर गरम।
इनको मिल जाए मक्कार
पेपर देते स्वयं उतार
टीचर की तनखाहें काट
मेज कुर्सियाँ जाते चाट
बच्चों से होता खिलवाड़
सभी कुछ ज़ीरा इनकी दाढ़
बाबू चना जोर गरम।
और ये दो हैं मूरख राज
चमचागीरी इनका काज
हमेशा खाते रहे उधार
लिए ये मक्खन का हथियार
रात को दिन ये देते बोल
बड़ा जो इन्हें खरीदे मोल।

बाबू चना जोर गरम।
इनसे बजवा लो जी ढोल
इनके भीतर पोलम्पोल
दुनिया में जितने चालाक
ये दोनों हैं उनकी नाक
लगाते इधर उधर की खूब
नदिया नाव में जाए डूब
बाबू चना जोर गरम।

देवदत्त : खादिम ?

खादिम : जी हुजूर।

देवदत्त : मूजियों से वसूल किया मैंने भरपूर।

खादिम : मज़ा तो बड़ा आया जनाब, मगर बुजुर्गों ने कहा है अंधेर नगरी चौपट्ट राजा से कोसों रहना चाहिए दूर !

देवदत्त : अबे अभी और मजा आयगा।

खादिम : मगर तब की सोचिए जब खुदा न करे हमारा भेद खुल जायगा।

देवदत्त : लेकिन सोच ज़रा यहाँ कितनी इज्जत मिल रही है।

खादिम : मगर खुदा न करे चेयरमैन साहब के घर से जेल भी दूर नहीं है।

देवदत्त : तू ठीक कहता है खादिम। आज करीब बारह सौ रुपए वसूले। बेहतर हो यहाँ से खिसक ही लें। मगर सुन ले, ये खत मैंने दिल्ली के अपने एक दोस्त को लिखा है (**खत देता है**) इसे पहले तू लेटर बाक्स में डाल आ फिर सोचते हैं कि आगे क्या करें।

खादिम : जो हुक्म (**खत लेकर जाता है**)

लोग : हमें साहब से मिलने दो। हम साहब से फरियाद करेंगे। हम साहब को अपनी तकलीफ़ें बताना चाहते हैं। तुम हमें साहब से मिलने से नहीं रोक सकते।

चौकीदार : साहब का हुक्म है। खबरदार, यहाँ से भाग जाओ वरना सबको गिरफ़्तार कर दिया जायगा।

देवदत्त : ये कैसा शोर है ?

लोग : हुजूर हम लोग आपसे मिलना चाहते हैं और अपनी तकलीफ़ें बयान करना चाहते हैं।

देवदत्त : इन्हें आने दो। (लोग आते हैं) अब बोलो, क्या बात है !

लोग : हम आपसे फरियाद करने आए हैं। हम न्याय चाहते हैं।

देवदत्त : तुम लोग निर्भय होकर बोलो। तुम्हें न्याय मिलेगा।

फरियादी एक : (दोहा)
धन्यवाद है आपको, जो सुनते फरियाद।
ऐसा शुभ अवसर मिला, बहुत दिनों के बाद ॥

कोरस : तोरी गठरी में लागा चोर
मुसाफिर जाग जरा—

फरियादी एक : (बहरतवील)
मुफ्तखोरी में उस्ताद है ये बहुत
जुल्म करता चेयरमैन हम पर बड़े।
हमसे हर चीज़ की घूस है माँगता
हम इसी के लिए आज आके खड़े ॥

दूसरा : (बहरतवील)
इसको उस दिन मेरी भैंस जो भा गई
उसको कोठी पे अपनी है बँधवा लिया।
बीन भी मुझसे कहता है आके बजा
और बदले में खोटा न सिक्का दिया ॥

तीसरा : (बहरतवील)
हर किसी को रहा लूटता ये बशर
मेरी मुर्गी को उठवा लिया अपने घर।

चौथा : (बहरतवील)
मेरी छोटी सी थी इक वहाँ झोपड़ी
उसमें दूकान जबरन है ली इसने कर ॥

देवदत्त : आप सभी की बात सुन, मुझको लगा जरूर।

बहुत बड़ा बदमाश है चेयरमैन मगरूर॥
(चौबोला)
ये मूजी मगरूर सताता है बेहद जनता को।
जितनी सख्ती करूँ कि इस पर कोई भी गम ना हो॥
ऐसे जो बदमाश उन्हें तुम चाहे जितना चाहो।
देना पड़ता दण्ड कड़ा जो इस जैसा फ़ितना हो॥

दूसरा : (बहरतवील)
इसपे मीसा जरा सा लगा दीजिए
इसकी नानी मरेगी इसी बात से।
ऐसे सीधी तरह आप कुछ भी करें
लात के भूत कब मानते बात से॥

देवदत्त : (दोहा)
मैंने समझा है यहाँ काफ़ी ही अन्धेर।
समझो इसके न्याय में होगी जरा न देर॥
(बहरतवील)
इसकी करने शिकायत बड़े लाट से
आज ही शाम दिल्ली को जाऊँगा मैं।
मेरे जाने का खर्चा दिला दें मुझे
लौट कर्जा सभी का चुकाऊँगा मैं॥

कोरस : तोरी गठरी में लगा चोर, मुसाफिर जाग जरा—
(लोग उसे धन देते हैं)
(लोगों का जाना)

धोबन : (आकर) हुजूर, मेरी भी सुनाई हो जाय हुजूर !

देवदत्त : क्या चाहती हो ?

धोबन : ढाए गए जुल्मों की फरियाद करना चाहती हूँ।

देवदत्त : ज़रूर, ज़रूर। चौकीदार, इसे आने दो। कौन हो तुम ?

धोबन : (दोहा)
मैं धोबन सरकार की, हरिजन मेरी जात।
मुझ पर ढाता जुल्म है चेयरमैन दिन रात॥

देवदत्त : (दोहा)
हुआ कौन सा जुल्म है तेरे ऊपर बोल।
निर्भय होकर तू यहाँ भेद सभी का खोल॥

धोबन : (बहरतवील)
मुल्क में हरिजनों का चलाया जिकर
बाबा गांधी ने हम सबको जीवन दिया।
हम हजारों बरस से यहाँ दास हैं
जानवर से भी बदतर हमें है किया॥
आज भी गन्दगी आपकी ढो रहे
आपके पैर में जूतियाँ बन पड़े।
जीना हमको जमीं पर भी दूभर हुआ
आसमाँ पर महल आपके हैं खड़े॥

कोरस : (दोहा)
शब्द यहाँ छोटे हुए इनके दुख को देख।
इन पर ढाए जुल्म को कहो न विधि का लेख॥

धोबन : (बहरतवील)
काम हाकिम की कोठी पे करती हूँ मैं
एक दिन कपड़े धोने को मैं थी गई।
हाथ इज्जत पे डाला चेयरमैन ने
बात है कुछ न इनके लिए ये नई॥
(दोहा)
असफल जब ये हो गया, लिया कलाई थाम।
कोड़े लगवाए लगा चोरी का इल्ज़ाम॥
(दौड़)
मुझे इससे बचवाओ
इसे तुम दण्ड दिलाओ
जुल्म को दूर कराओ
बदल गई सरकार न्याय अब तो दिलवाओ॥

देवदत्त : (दोहा)

समझ गया मैं हो रहा यहाँ बड़ा अन्याय।
चेयरमैन को जेल में मैं दूंगा भिजवाय।।
जब जब होता धर्म का इस धरती पर नाश।
जन्म तभी लेता यहाँ, मैं कर लो विश्वास।।
(बहरतवील)
एक दे दो पेटीशन मेरी तुम सुनो
मैं उसे ठीक अफ़सर को दूंगा पठा।
फीस लेकिन लगेगी जरा सी वहाँ
पूंछ इन हाकिमों की मैं लूंगा कटा।।

धोबन : फीस ?

(दोहा)
रुपए ये दो तीन हैं और न मेरे पास।
रही आपको सौंपती मुझे आपकी आस।।

(जाती है। तभी दूसरे बहुत से गरीब लोग आते हैं)

देवदत्त : (थोड़ा गुस्से से) क्या चाहिए, कौन लोग हो तुम ?

सभी : (रसिया)

मारि गई महँगाई हो रामा
बीच बजरिया—
बाबू रोवै बबुवाइन रोवै
फाटि गई पतलुनिया हो रामा बीच बजरिया।
नकली बेचैं मिलाय दें गोबर
खालि खींचि लै जाई हो रामा बीच बजरिया।
घी के नाम कनस्तर बेचैं
मोटर के तेल मिलाई हो रामा बीच बजरिया।
रोवै गरीबी नाचै अमीरी
सब मिलि लूट मचाई हो रामा बीच बजरिया।

देवदत्त : अरे रे, तुम सब कहाँ घुस आए—ए चौकीदार—

सभी : हुजूर अर्जी है—

देवदत्त : तंग आ गया हूँ तुम लोगों से। आउट। गेट आउट।

(चौकीदार। देवदत्त सबको धक्के मारकर भगाता है)

कोरस : (कव्वाली)

उन्हें क्या आपसे मतलब न वो इन्साफ़ ही जाने।
कमर से बाँधकर कुर्सी वहाँ बैठे हैं दीवाने।।
हमारा फैसला करने जो आए आज सज धजकर
मुखौटे चमचमाते हैं चढ़े मक्रो फरेबी पर
जरा गर्दन में देकर खम धँसे कुर्सी में जैसे खर
तबेले का तबेला ही समूचा आ गया ऊपर
जहालत इनके सिरहाने जलालत इनके पैताने।।
उन्हें क्या…
चलो ईनाम बिकते हैं यहाँ ईमान के बदले
लगी है सेल चुन लो जी कि शायद लाटरी निकले
बिकाऊ है धरम इनका भरी जेबों पे है फिसले
अगर हो आपसे सौदा मिलेंगे द्वार ये पिछले
सचाई इनकी हम जाने सिफ़त इनकी सभी जाने।।
उन्हें क्या…

(चंचल आती है)

चंचल : (घबराकर) ओह।

देवदत्त : आइए, आइए। तशरीफ लाइए।

चंचल : ओहो, माफ़ी चाहती हूँ—

देवदत्त : क्या आप कहीं जा रही थीं ?

चंचल : जी नहीं।

देवदत्त : कहीं से आ रही हैं ?

चंचल : मैं देखने आई थी कि ममी यहाँ हैं या नहीं। आप तो काफ़ी व्यस्त होंगे।

देवदत्त : मैं ? जी हाँ। जी हाँ। बहुत व्यस्त। लेकिन कोई बात

नहीं। आप तशरीफ़ रखिए।

चंचल : नहीं आप बोर होंगे।

देवदत्त : लानत है मुझ पर। जनाब सच बात यह है कि आपको देखकर ही तबियत खुश हो जाती है।

चंचल : सच ?

देवदत्त : (दोहा)

नजर आपकी तुरत ही कर देती मदहोश।
जब से देखा आपको खो बैठा हूँ होश।।
(घुटने पर गिरता है)

चंचल : (दोहा

हाल मेरा भी कुछ आप सुन लीजिए
दिल धड़कने लगा है धकाधक मेरा।
रात में नींद भी मुझको आई नहीं
हो गया है यहाँ खूने नाहक मेरा।।

श्रीमती : (आकर घूरती है। चंचला डरती है। भाग जाती है। देवदत्त उसी तरह आँख बन्द किए झुका रहता है)
ये क्या हो रहा है ?

देवदत्त : (उसी जोश में। बहरतवील)

नजर गड़ गई तेरे चेहरे पे ज्यों
मैं ठगा सा पड़ा रह गया हूँ यहाँ।
जैसे जादू सा मुझपे किसी ने किया
मैं गया भूल अपना हूँ दीनो जहाँ।।

श्रीमती : (दोहा)

हाय कह रहे आप क्या, किससे हैं सरकार।
किससे कहते इश्क की बातें बारंबार।।

देवदत्त : (आँख खोलकर) अबे मर गए।
(बहरतवील)

बात मैं अपने अन्दर छुपाए रहा
आज मैं आपसे ले इजाजत कहूँ।

इश्क ने मेरे ऊपर अब किया है सितम
मैं माशूक अब न और जिन्दा रहूँ।।

श्रीमती : (बहरतवील)

आपको उम्र भगवान दे दें बड़ी
आप जिसके लिए ऐसे बेचैन हैं।
मेरी बेटी है वो चाहते हैं जिसे
हो गया था पता जब न हम क्या कहे।।

देवदत्त : (दोहा)

गलत मुझे मत मानिए, हुआ आपका दास।
सिर्फ़ आपको चाहता, रहूँ आपके पास।।

श्रीमती : (दोहा)

हाय हुई सौ जान से फिदा आप पर आज।
लेकिन मैं शादी शुदा, आती मुझको लाज।।

देवदत्त : (बहरतवील)

शुरू प्यार का हो गया सिलसिला

श्रीमती : —मेरे दिल में बताशे लगे फूटने।

देवदत्त : इश्क के पेंच लड़ते हैं आकाश में

श्रीमती : —जो जले वो लगे छातियाँ कूटने।।

चंचल : (आकर) ममी, पापा पूछ रहे हैं कि—हे भगवान, ये मैं क्या देख रही हूँ ?

श्रीमती : (बहरतवील) या खुदा मर गई

देवदत्त : और मैं भी मरा

श्रीमती : सारा भाँड़ा अभी फूट जाने को है।

देवदत्त : बात मुश्किल मुझे है बनानी हुई

श्रीमती : देख सब कुछ लिया आँधी आने को है।।

देवदत्त : (दोहा)

सुनो सुन्दरी बात को मैं देता समझाय।
माँ से कहता था मेरी शादी दो करवाय।।

(बहरतवील)
हाथ माँ जी के मैं था यहाँ जोड़ता
तुमसे शादी का प्रस्ताव वो मान लें।
खुशनसीबी इसे मैं कहूँगा सुनो,
हाथ आपस में हम दोनो गर थाम लें॥

श्रीमती : (दोहा)
हाय आपकी बात सुन होऊँगी बेहोश।
बेटी ऊँचे घर चली, मुझको यह संतोष॥

चंचल : (बहरतवील)
हाय मम्मी मुझे शर्म है आ रही
इनसे आँखें न अब मैं मिला पाऊँगी।
(जाती है)

श्रीमती : आला अफ़सर का पैगाम मंजूर है
मैं अभी जाके नौबत को बजवाऊँगी॥
(हीजड़ों का एक गाना)

कोरस : (बन्ना)
बन्ना घोड़ी पे आया द्वार
मैं जाऊँ बलिहारी।
बन्ना मजे से खाए लड्डू
मोटा पंडित जैसे डड्डू
घोड़ी सजी तैयार—मैं जाऊँ—
बन्ने की टोपी झालरवाली
बन्ने की सासू बड़ी निराली
ससुरा है पाकेट मार—मैं जाऊँ—
डेढ़ टके का देख तमाशा
बन्ने ने बन्नी को फाँसा
खाए हुए उधार—मैं जाऊँ—

चेयरमैन : (आकर) ओह, मेरी खुशी की सीमा नहीं है हुजूर—क्या यह सब सच है ?

देवदत्त : बिल्कुल सच है जनाब सिर्फ़ आपकी हाँ की कसर है—

चेयरमैन : मेरी हाँ ?

श्रीमती : हाँ कर दीजिए—

देवदत्त : हाँ करिए, जल्दी हाँ करिए—(थोड़ा दबाव से) बोलिए हाँ—

चेयरमैन : हाँ !

देवदत्त : या खुदा शुक्र है। खादिम। जल्दी सामान बाँध।

चेयरमैन : जी ?

देवदत्त : और क्या ? अब इजाज़त लूँगा। खादिम जल्दी सामान बाँध।

चेयरमैन : मगर क्यूँ।

श्रीमती : क्यूँ क्या जी, आप समझाते तो हैं नहीं। जमाई बाबू जाएँगे तभी तो बारात लाएँगे।

चेयरमैन : हाय आज कैसा खुश हूँ। लाइए, सामान मैं पैक कर देता हूँ—(खादिम ट्रंक लेकर आता है) चलिए, मैं गाड़ी पर पहुँचा दूँ—

देवदत्त : न !

चेयरमैन : मगर क्यों ?

देवदत्त : आपसे कुछ लूँगा तो वह दहेज भी समझा जा सकता है। दहेज का मैं सख्त विरोधी हूँ। चाहे तो पाँच सौ एक रुपए से तिलक कर दें। जाऊँगा मैं टैक्सी से।
(लोग तिलक करते हैं। देवदत्त खादिम सहित जाता है)

श्रीमती : रास्ते में ट्रेन से मत उतरिएगा।

चंचल : (भागकर आती है) जाते ही ख़त लिखिएगा !

कोरस : चाँद सा कोई चेहरा जो पहलू में हो
इससे आगे हमें नहीं आता—
अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो
अस्सी नब्बे पूरे सौ

सौ में लागा धागा।
चोर निकल के भागा।
चाँद सा कोई चेहरा—

रंगा : (दोहा)
सुनें और भी कान देकर आगे का हाल।
चेयरमैन हो शेर फिर खड़ा बजाए गाल।।
(दौड़)
उँगलियाँ घी में पाँचो
हाल आगे का बाँचो।
बढ़ गया उसका साहस
सैयाँ हो कोतवाल चलेगा फिर उस पर किसका बस।।

हाकिम, इन्स्पेक्टर, हेडमास्टर, चोखे, अनोखे : (सभी चापलूसी करते हुए) जनाब बधाई स्वीकार करें। कॉंग्रेचुलेशन्स। यह हम सबका भी सौभाग्य है। हमें अब भूल मत जाइएगा।

चेयरमैन : भूल जाऊँगा ?

हेडमास्टर : म-मेरा मतलब है अब आप ज़रूर और बड़े ओहदे पर प-प-पहुँचेंगे—अ-आ-आला अफ़सर आखिर दामाद हो गया है—हमें भूल मत जाइएगा हुज़ूर—

श्रीमती : लीजिए लड्डू खाइए। वैसे एक बात आप लोगों को कह दूँ दिल्ली जाकर तो चेयरमैन साहब बहुत बिज़ी हो जायेंगे। उन्हें आलतू-फालतू कामों से परेशान मत कीजिएगा। हाय दिल्ली कैसी अच्छी जगह है!

लोग : इस शादी में बड़े-बड़े लोग आएँगे। लाट गवर्नर भी आएँगे।

श्रीमती : वो तो होगा ही।

चेयरमैन : (दोहा)
अब उनको बुलवाइए जो करते फरियाद।
ऐसे जूते पड़ेंगे आए नानी याद।।

पोस्टमास्टर : (तेज़ी से आता है) गजब हो गया—हम लुट गए। सब कबाड़ा हो गया।

लोग : क्या हुआ।

चेयरमैन : कुछ बोलोगे भी क्या हुआ।

पोस्टमास्टर : अजी भयंकर। ग़जब।

चेयरमैन : हुआ क्या ?

श्रीमती : बुरी खबर तो नहीं ?

पोस्टमास्टर : बुरी ? बुरी से भी और बुरी।

चेयरमैन : हुआ क्या।

पोस्टमास्टर : तो दिल थामकर सुनिए—
(दोहा)
आला अफ़सर एक खत दिल्ली रहा पठाय।
पोस्टमैन को बोलकर मैंने लिया खुलाय।।

चेयरमैन : ऐ आला अफ़सर की, मेरे दामाद हुज़ूर की चिट्ठी तुमने खोल ली ?
(बहरतवील)
पोस्टमास्टर के बच्चे किया तूने क्या
आला अफ़सर का खत तूने क्यों पढ़ लिया।
तुझको इस जुर्म में जेल भिजवाऊँगा
तूने इतना बड़ा कैसे साहस किया।।

पोस्टमास्टर : बात मेरी सुनें क्रोध कुछ मत करें
आप खुद खत को देखेंगे गश खाएँगे।
आला अफ़सर था बिल्कुल न वो नौजवाँ
कोई था और जानेंगे पछताएँगे।।

लोग : हैरत है ? क्या सचमुच ? क्या वो आला अफ़सर नहीं था ?

चेयरमैन : लाओ खत मुझे दो।
(दोहा)
चितपुर से चिट्ठी लिखी यही यार के नाम।

यॉं पर सारी खैर है पहुँचे तुम्हें सलाम ।।

(चौबोला)

पहुँचे तुम्हें सलाम हाल मैं आगे तुम्हें सुनाता हूँ ।
काट रहा हूँ मौज यहाँ हर शख्स गावदी पाता हूँ ।।
चेयरमैन है मूढ़...
नहीं नहीं आगे कोई खास बात नहीं है ।

हाकिम : मुझे पढ़ने दीजिए—
चेयरमैन है मूढ़ उसी उल्लू के घर में रहता हूँ ।
उसकी बीवी से इश्क और बेटी को प्यार जताता हूँ ।।

चेयरमैन : हरामजादा !

(बहरतवील)

हाकिम : बात अब तुम सुनो एक हाकिम यहाँ
बेवकूफ़ी में दुनिया में बेजोड़ है ।
—खैर इसे छोड़ो ।

हेडमास्टर : लाइए मैं पढ़ता हूँ—
बात अब तुम सुनो एक हाकिम यहाँ
बेवकूफ़ी में दुनिया में बेजोड़ है ।
एक ह-ह-हकला है जो—
—नहीं आगे बेकार है ।

इन्स्पेक्टर : लाइए, मैं पढ़ूँगा—
एक हकला है जो हेडमास्टर बना
उसके बौड़मपने की नहीं तोड़ है !

हेडमास्टर : ग-ग-ग-गधा ससरा ।

इन्स्पेक्टर : आलसी और मूज़ी दरोगा बड़ा
—बेहूदा साला—

चेयरमैन : लाओ मुझे ही पढ़ने दो
आलसी और मूज़ी दरोगा बड़ा
सबके पापों का यॉं पर भरा है घड़ा ।

सबको धमका के मैंने वसूला है धन
सबको लाइन में मैंने किया था खड़ा ।।
आला अफ़सर यहाँ कोई आने को था,
उसके धोके में समझे थे अफ़सर मुझे ।
मौज से कट रही है यहाँ जिन्दगी
हाल सुनके हँसी आएगी ही तुझे ।।
तुम्हारा—देवदत्त ! कमीना साला ।

सभी : हरामजादा !

चौकीदार : (आकर) हुजूर एक सरकारी आदमी एक बहुत ज़रूरी पैगाम लाया है—

चेयरमैन : पैगाम ? अब क्या है ?

चौकीदार : चेयरमैन सहित चितपुर के सभी हुक्मरानों को इत्तला दी जाती है कि लोगों की शिकायतों को मद्देनज़र रखते हुए सरकार ने जो आला अफ़सर मामले की जाँच-पड़ताल के लिए नियुक्त किया है वो कल सुबह चितपुर पहुँच रहा है !

कोरस : (दोहा)
धार तेल की देखिए और देखिए तेल ।
मीठा कड़वा जो रहा खतम हुआ है खेल ।।